04 - शकील बदायूनी, बेहतरीन गीतकार

05 - नंदलाल बोस और माटी के महक वाली कलाकृतियां

A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 20 अप्रैल, 2025

06 - जिले में 88 प्रतिशत ई-केवाईसी का काम पूरा, फिंगर...

07 - हिंदी फिल्मों में यहूदियों के योगदान का दौर

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 190, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

भोपाल में चैत्र की एक सुबह...

फोटो : जगदीश कौशल

सुप्रभात

पत्थरों

और चट्टानों में से होते हुए
हम पहाड़ से उतरेंगे
वहाँ जहाँ तीखी धार वाली नदी बहती है।
पीछे मुड़ेंगे,
हाथ जोड़कर पहाड़ के आगे झुकेंगे।
नदी के किनारे बैठे रहेंगे बहुत देर तक,
उसे बहते हुए देखेंगे,
अन्तिम बार उसका पानी चखेंगे।
फिर सारे दृश्य को
आँखों में समेटकर
उतर पड़ेंगे पानी में।

- रुस्तम सिंह

बहुत जल्द अंतरिक्ष में एक और इतिहास रचेगा भारत

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत अंतरिक्ष के क्षेत्र में नई उपलब्धि हासिल करने की दिशा में लगातार आगे बढ़ रहा है। देश अपनी अंतरिक्ष यात्रा में फिर से इतिहास लिखने वाला है। 4 दशक के बाद किसी भारतीय अंतरिक्ष यात्री को अगले महीने अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन में भेजने का फैसला हुआ है। केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। वह भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन की भविष्य की प्रमुख योजनाओं की समीक्षा के लिए आयोजित उच्च स्तरीय बैठक के बाद बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि इस मिशन में भारतीय वायु सेना के ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला को भेजा जा रहा है। जितेंद्र सिंह ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन का दौरा करने वाले पहले भारतीय राकेश शर्मा हैं। सोवियत अंतरिक्ष यान पर 1984 की उनकी उड़ान के बाद चार दशकों में अंतरिक्ष की यात्रा करने वाले यह पहले भारतीय अंतरिक्ष यात्री होंगे। समीक्षा बैठक में अंतरिक्ष विभाग के सचिव और इसरो के अध्यक्ष डॉ. वी. नारायणन ने कई आगामी अंतरिक्ष मिशनों की स्थिति पर प्रस्तुति दी। उन्होंने बताया कि ग्रुप कैप्टन शुक्ला अगले महीने एक्सिओम स्पेस के एक्स-4 मिशन के तहत स्पेस के लिए उड़ान भरने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। ग्रुप कैप्टन शुक्ला का यह मिशन भारत के बढ़ते अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष सहयोग में एक मील का पत्थर है। वह वायुसेना के ट्रेंड पायलट हैं और उन्हें इसरो के मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम के तहत चुना गया था। वह भारत की पहली स्वदेशी चालक दल वाली कक्षीय उड़ान गगनयान मिशन के लिए शीर्ष दावेदारों में से एक हैं। साल 2006 में वह भारतीय वायुसेना में फाइटर पायलट के रूप में शामिल हुए। उनके पास सुखोई-30 एसयूवी, मिग-21, मिग-29, जगुआर, हॉक, डोर्नियर और एम-32 जैसे विमानों को उड़ाने का 2000 घंटे से अधिक का अनुभव है।

स्पेस स्टेशन के लिए मई में रवाना होंगे शुभांशु शुक्ला

बीजेपी चीफ बनने की रेस में मोदी सरकार के तीन मंत्री

बदल सकता है कैबिनेट का गणित,कुछ अन्य की होगी एंट्री

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा के नए अध्यक्ष का ऐलान कभी भी हो सकता है। चर्चा है कि अप्रैल के आखिर तक भाजपा की ओर से जेपी नड्डा के विकल्प के तौर पर किसी नए नेता के नाम का ऐलान हो सकता है। भाजपा सूत्रों का कहना है कि केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल खट्टर का नाम भी अध्यक्ष की रेस में है। इसके अलावा मोदी सरकार में ही मंत्री धर्मेंद्र प्रधान और भूपेंद्र यादव के नामों की भी चर्चा जोरों पर है। कहा जा रहा है कि इन तीन नेताओं में से किसी एक को अध्यक्ष की जिम्मेदारी दी जा सकती है। अध्यक्ष पर फैसला लेने से पहले आरएसएस की सलाह भी ली जाएगी। वहीं उससे पहले यूपी, बंगाल, आंध्र प्रदेश जैसे बड़े राज्यों में अध्यक्ष का फैसला भी लिया जाएगा। तभी राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव होगा। पार्टी सूत्रों का कहना है कि भाजपा 25 अप्रैल तक यूपी समेत कई राज्यों में अध्यक्षों का ऐलान कर सकती है। इसके बाद राष्ट्रीय अध्यक्ष के लिए नामांकन दाखिल किया जाएगा और किसी एक नेता का नाम सर्वसम्मति से तय किया जाएगा। पार्टी सूत्रों का कहना है कि मनोहर लाल खट्टर को लेकर सहमति बनने की संभावना अधिक है। इसकी वजह है कि वह पीएम नरेंद्र मोदी के करीबी हैं और उनकी पहली पसंद भी हैं। लंबे समय तक आरएसएस प्रचारक के तौर पर काम करने वाले मनोहर लाल खट्टर को संगठन की अच्छी समझ है। इसके अलावा आरएसएस को भी उनके नाम पर आपत्ति नहीं होगी, जो मानता है उसकी वैचारिक पृष्ठभूमि के नेता के हाथ में ही पार्टी की कमान होनी चाहिए।

मुरैना में पर्यटन की बहुत संभावनाएं हैं: सीएम यादव

चंबल क्षेत्र में भी छोड़े जाएंगे चीते, औद्योगिक इकाइयां भी बढ़ाएंगे

मुरैना (नप्र)। श्योपुर की तर्ज पर अब मुरैना जिले के चंबल क्षेत्र में भी चीते छोड़े जाएंगे। मुरैना में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सड़क बनाई जाएगी और हेलिकॉप्टर सेवा भी शुरू की जाएगी। यह बात मुख्यमंत्री मोहन यादव ने शनिवार को मुरैना में अल्पप्रवास के अवसर पर कही। वह यहां पर क्षेत्रीय सांसद शिवमंगल सिंह तोमर के बेटे लगुन फलदान कार्यक्रम में भाग लेने आए थे।

इस दौरान उनके साथ विधानसभा अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर, कृषि मंत्री एदल सिंह कंषाना, उपमुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ला और मंत्री राकेश शुक्ला सहित अन्य लोग मौजूद थे। मीडिया से चर्चा करने के दौरान उन्होंने कहा कि मुरैना जिले में रोजगार की बहुत समस्या है। यहां के लोगों के पास रोजगार नहीं है।

औद्योगिक इकाइयां बढ़ाएंगे- मुख्यमंत्री ने कहा कि मुरैना जिले में औद्योगिक इकाइयों को बढ़ाने के लिए वे प्रयास कर रहे हैं। नए उद्योगपतियों को यहां इकाइयां लगाने के लिए न्योता भी दे चुके हैं। उन्हें पूरी उम्मीद है कि यहां पर जल्द ही बड़ी औद्योगिक इकाइयां लगाई जाएंगी।

जनप्रतिनिधियों और आमजन से की मुलाकात

बता दें कि, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव आज एक दिवसीय प्रवास पर मुरैना पहुंचे थे। वे बड़ागांव नावली में आयोजित सांसद शिव मंगल सिंह तोमर के बेटे के लगुन फलदान कार्यक्रम में शामिल हुए। सीएम सुबह 11 बजे मुरैना जिले के बड़ागांव नावली पहुंचे, यहां उन्होंने फलदान कार्यक्रम में शामिल होने के बाद जनप्रतिनिधियों और आमजन से मुलाकात की। इसके बाद बड़ागांव नावली से रवाना होकर ग्वालियर पहुंचे। ग्वालियर से विशेष विमान से वह भोपाल के लिए रवाना हो गए।

सड़क का चौड़ीकरण होगा, हेलिकॉप्टर सेवा भी शुरू होगी

यहां पर पर्यटन की बहुत संभावनाएं हैं, इसलिए इस क्षेत्र को पर्यटन की दृष्टि से मजबूत बनाया जाएगा। इसके लिए वह श्योपुर की तर्ज पर यहां भी चंबल सफारी बनाएंगे तथा उनमें चीते छोड़ने की योजना के अगले चरण की तरफ बढ़ रहे हैं। यहां आने के लिए सड़क का चौड़ीकरण किया जाएगा और हेलिकॉप्टर सेवा भी शुरू की जाएगी।

रांची के आसमान पर एयर शो में दिखा सेना का शौर्य

- **विमानों ने बनाया तिरंगा,आज भी दिखेंगे हैरतअंगेज करतब**

रांची (एजेंसी)। रांची के नामकुम के खोजा टोली स्थित आर्मी ग्राउंड में शनिवार को ट्रेंड पायलट ने हॉक विमान से आसमान में एक घंटे तक करतब दिखाया। आसमान पर फॉग से तिरंगा बनाया। 5 मीटर से भी कम की दूरी मेंटेन करते हुए पायलट आसमान में तिरंगा बनाया। यह आयोजन रविवार को भी किया जाएगा। वायुसेना के पायलट हॉक विमान से डीएनए मनोहर, लूप और क्रॉस समेत अन्य कई तरह के हैरतअंगेज करतब दिखाया। एयर शो के दौरान रांची के लोगों ने आसमान में विमान से तिरंगे को लहराते हुए देखा। एयर शो दो भागों में बंटा। पहले भाग में 9 विमान एक साथ उड़ान भरा। ये विमान 5 मीटर की दूरी मेंटेन करते हुए एक साथ उड़े। दूसरे भाग में सभी 9 विमान अलग-अलग दिशाओं से अपनी गति का प्रमाण देते हुए अलग-अलग आकृतियां आसमान में बनाया। इसके अलावा विमान उलटी उड़ान भरते हुए भी नजर आए। टीम के पायलटों ने 6 महीने कठिन अभ्यास कर अपनी तैयारी पूरी की है। अजय दशरथी, जशदीप सिंह, कुलदीप हुड्डा, सिद्धेश कार्तिक, विष्णु, अंकित वशिष्ठ, गौरव पटेल, अर्जुन पटेल और दिवाकर शर्मा। सूर्यकिरण की टीम में शामिल ये जांबाज अपने करतब से रांची को आश्चर्यचकित कर दिया। इधर, एयर इंडिया एक्सप्रेस की दिल्ली फ्लाइट री-शेड्यूल कर 9.20 बजे की गई। रांची से दिल्ली जाने वाली इंडिगो की फ्लाइट का री-शेड्यूल, 9.25 बजे गई। रांची से हैदराबाद की फ्लाइट ने एयर शो खत्म होने के बाद उड़ान भरा।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 25°c
न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 20 अप्रैल 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

लगेगी टैरिफ की आग आएंगे जद में कई देश!

- अमेरिका से छूट पाने वाले देशों पर भी भड़का चीन

बीजिंग (एजेंसी)। अमेरिका ने चीन पर 245 फीसदी का टैरिफ लगाया है, जबकि भारत समेत कई देशों को अगले 90 दिनों की मोहलत दी है। इस पर चीन का कहना है कि भले ही अमेरिका ने हमारे ऊपर ही फिलहाल टैरिफ लगाया है, लेकिन इसका भी नुकसान तमाम देशों को होगा। चीन ने एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि

अमेरिका चाहता है कि 70 अन्य देश भी चीन से कारोबार कम करें। उसका कहना है कि ऐसा न हो कि वे चीन से सामान की खरीद करें और फिर अमेरिका को ही निर्यात कर दें। ऐसे में उन्हें चीन से अपने कारोबार को ही कम करना होगा। अमेरिका का कहना है कि चीनी कंपनियों को टैरिफ से बचने के लिए रीलोकेट भी न होने दिया जाए। इसके अलावा सस्ते चीनी माल को भी इन देशों में एंट्री न देने की बात कही है। इसी को आधार बनाते हुए ड्रैगन का कहना है कि यदि चीन के साथ दुनिया के तमाम देशों ने कारोबार बंद किया तो वैश्विक मंदी के हालात पैदा होंगे। चीन के सरकारी अखबार ग्लोबल टाइम्स ने कहा कि अमेरिका ने हमारे ऊपर ऊंचा टैरिफ लगाया है, जबकि दूसरे देशों को रियायत दी है। उसकी कोशिश यह है कि ऐसा करने से दुनिया भर से उसका टकराव नहीं होगा।

अंडरवर्ल्ड डॉन रहे मुथप्पा राय के बेटे पर जानलेवा हमला

- बेंगलुरु में घर से केवल 200 मीटर दूर हमला, बिल्डर और पूर्व पत्नी पर शक

बेंगलुरु (एजेंसी)। पूर्व अंडरवर्ल्ड डॉन मुथप्पा राय के बेटे रिकी राय पर शुक्रवार देर रात बेंगलुरु के पास बिददी इलाके में जानलेवा हमला हुआ। पुलिस के अनुसार, रिकी राय अपनी कार में ड्राइवर और गनमैन के साथ बेंगलुरु लौट रहे थे। रात करीब 1.30 बजे, उनके घर से महज 200 मीटर दूर, एक अज्ञात हमलावर ने दो राउंड फायरिंग

की। दोनों को बेंगलुरु के मणिपाल अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां डॉक्टरों ने कहा कि दोनों खतरे से बाहर हैं। पुलिस सूत्रों के मुताबिक, रिकी हाल ही में रूस से लौटे थे और पारिवारिक मामलों को सुलझा रहे थे। हमले की एक बड़ी वजह एक रियल एस्टेट कारोबारी से चल रहा विवाद मानी जा रही है। रिकी के ड्राइवर ने एक बिल्डर और रिकी की पहली पत्नी पर शक जताया है। मुथप्पा राय के एक पुराना दुश्मन भी जांच के घेरे में है। बिददी पुलिस स्टेशन में अटेंप्ट टू मर्डर और आर्म्स एक्ट

दिल्ली में 4 मंजिला इमारत गिरी, 4 लोगों की मौत

- 10 से ज्यादा लोग अब भी मलबे में फंसे, रेस्क्यू ऑपरेशन जारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के मुस्तफाबाद इलाके में शुक्रवार देर रात ढाई बजे 4 मंजिला बिल्डिंग ढह गई। हादसे में अब तक 4 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि अभी भी 10 से ज्यादा लोगों के मलबे में फंसे होने की आशंका है। पुलिस के मुताबिक, हादसे में 22 से ज्यादा लोग मलबे में दब गए थे। अब तक 14 लोगों को रेस्क्यू कर जीटीबी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां डॉक्टरों ने 4 को मृत घोषित कर दिया। मौके पर एनडीआरएफ

और दिल्ली पुलिस की टीमें रेस्क्यू ऑपरेशन में जुटी हैं। डिविजनल फायर ऑफीसर राजेंद्र अटवाल ने बताया कि देर रात करीब 2.50 बजे एक मकान ढहने की सूचना मिली थी। मौके पर पहुंचे तो पता चला कि पूरी बिल्डिंग ढह गई है और लोग मलबे में फंसे हुए हैं। पुलिस के साथ मिलकर बचाव अभियान चलाया है। दरअसल, शुक्रवार रात दिल्ली में मौसम ने अचानक करवट ली थी। तेज बारिश और आंधी-तूफान के चलते कई इलाकों में नुकसान हुआ। माना जा रहा है कि इसी वजह से मुस्तफाबाद की इमारत भी ढह गई। डिप्टी स्पीकर और मुस्तफाबाद से विधायक मोहन सिंह बिष्ट ने मौके पर पहुंचकर कहा कि यह हादसा एमसीडी की लापरवाही और भ्रष्टाचार का नतीजा है। उन्होंने बताया कि चुनाव जीतने के बाद इस इमारत को खतरनाक बताया था।

दो घंटे एक्सरसाइज, 6 घंटे की नींद बेहद जरूरी

शाह बोले-पिछले 5 सालों में रुटीन बदला, आज सभी दवाओं से मुक्त होकर खड़ा हूं

नई दिल्ली (एजेंसी)। गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि, देश के युवाओं को अगर स्वस्थ्य और फिट रहना है तो उन्हें अपने रुटीन में बदलाव करना होगा। यह बात मैं अपने पर्सनल एक्सपीरियंस से बोल रहा हूं। अमित शाह ने नई दिल्ली में वर्ल्ड लिवर डे पर इंस्टीट्यूट ऑफ लिवर एंड बाइलरी साइंसेस की तरफ से आयोजित एक कार्यक्रम में ये बातें कहीं। शाह ने कहा कि देश के युवाओं को अभी 40-50 साल और जीना है और देश की प्रगति में योगदान देना है। मैं उनसे अनुरोध करता हूं कि वे अपने शरीर के लिए दो घंटे व्यायाम और अपने दिमाग के लिए छह घंटे की नींद रिजर्व करें। शाह बोले- आज किसी भी तरह की दवा की जरूरत नहीं। अमित शाह ने कहा, मई 2020 से लेकर आज तक मैंने अपने जीवन में बहुत बड़ा बदलाव किया। आवश्यक मात्रा में नींद, पानी और आहार और नियमित व्यायाम ने मुझे बहुत कुछ दिया है। आज मैं आपके सामने किसी भी तरह की एलोपैथिक दवा और इंसुलिन से मुक्त होकर खड़ा हूं। यह मेरा अपना अनुभव है।

मुर्शिदाबाद हिंसा ममता के लिए बनी गले की फांस!

मुश्किल में सरकार, आसान नहीं होगा इस दंगे का 'दाग' छुड़ाना

कोलकाता (एजेंसी)। वक्फ संशोधन कानून के विरोध के नाम पर पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद में जिस तरह से हिंसा को अंजाम दिया गया, उसकी हकीकत की परतें अब खुलने लगी हैं। पहले जिस तरह से इन हिंसक वारदातों की जानकारियां सामने आई, उससे इसकी भयानकता का अंदाजा नहीं लग पा रहा था। लेकिन, जब राष्ट्रीय महिला आयोग और पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सीवी आनंद बोस के सामने हिंसा पीड़ितों ने अपने हालात बयां किए हैं तो यकीन करना मुश्किल हो रहा है कि यह सब उस राज्य में हो रहा है, जहां 14 वर्षों से एक महिला मुख्यमंत्री शासन कर रही हैं।

ममता सरकार में घर में ही शरणार्थी बन गए लोग- पश्चिम बंगाल में ममताराज में इससे पहले कई ऐसी घटनाएं हुई हैं, जो सियासी दावों और प्रतिदावों में उलझकर हवा हो चुकी हैं। लेकिन, इस बार मामला बहुत ही भयानक है। तृणमूल सरकार इस हकीकत से मुंह नहीं फेर सकती कि आज बंगाल के ऐसे दिन हो गए हैं कि अपने ही प्रदेश में लोगों को शरणार्थी बनकर रहने को मजबूर कर दिया गया है। जो राज्य सरकार मुर्शिदाबाद को जलने से रोक नहीं पाई, वह प्रदेश के राज्यपाल को कानून-व्यवस्था के नाम पर दंगा पीड़ितों से मुलाकात नहीं करने की सलाह दे रही थी। खैर बंगाल के गवर्नर सीवी आनंद बोस ने राज्य सरकार की सलाह को नजरअंदाज कर राहत शिविरों में रह रहे मुर्शिदाबाद हिंसा पीड़ितों से मुलाकात की। एएनआई के मुताबिक राज्यपाल ने पीड़ितों से बातचीत के बाद मीडिया वालों से कहा है, वे (पीड़ित) सुरक्षा का माहौल चाहते हैं और निश्चित रूप से कुछ अन्य मांगें या उनके द्वारा दिए गए सुझाव भी हैं।

बार-बार क्रैश हो रहे हैं चेतक और चीता, अब ध्रुव पर भी ब्रेक

'हेलीकॉप्टर' संकट से जूझ रही हैं भारतीय सेनाएं, बड़ी है मुश्किल

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सशस्त्र बलों को एक बड़े संकट का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि लगभग 330 'ध्रुव' एडवांस्ड लाइट हेलीकॉप्टर (एएलएच) लंबे समय से ग्राउंडेड हैं। इसने सैन्य अभियानों, विशेष रूप से अग्रिम क्षेत्रों में सप्लाई उड़ानों और टोही मिशनों को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। भारतीय सशस्त्र बल पहले से ही 350 पुराने सिंगल-इंजन वाले चेतक और चीता हेलिकॉप्टरों की खराब हालत और बार-बार क्रैश होने की घटनाओं से जूझ रहे हैं। ये 'ध्रुव' हेलीकॉप्टर भारतीय सेना, वायुसेना, नौसेना और तटरक्षक बल की रीढ़ माने जाते हैं। ये हेलीकॉप्टर चीन और पाकिस्तान के साथ लगती सीमाओं के अग्रिम क्षेत्रों में 'सस्टेनेन्स फ्लाइट्स', निगरानी, टोही, खोज और बचाव अभियानों में अहम भूमिका निभाते हैं। लेकिन पिछले तीन महीनों से इन सभी अभियानों में भारी रुकावट आ रही है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि, सभी सैन्य अभियानों पर असर पड़ा है।

हेलीकॉप्टरों की भारी कमी सिविल चॉपर्स से राहत

ALH की ग्राउंडिंग से पहले से चली आ रही हेलिकॉप्टरों की भारी कमी और गहरा गई है। सशस्त्र बलों ने आने वाले 10-15 वर्षों में अलग-अलग श्रेणी के 1,000 से अधिक नए हेलिकॉप्टरों की आवश्यकता जताई है। इनमें 484 लाइट यूटिलिटी हेलीकॉप्टर और 419 मल्टी-रोल हेलीकॉप्टर शामिल हैं। लेकिन एएलएच द्वारा इन परियोजनाओं में लगातार देरी हो रही है। हालांकि, पिछले महीने एएलएच के साथ हुई 62,700 करोड़ रुपये की डील के तहत 2028 से 2033 के बीच 156 'प्रचंड' लाइट कॉम्बैट हेलीकॉप्टर मिलने की उम्मीद है।

सबसे ज्यादा असर भारतीय सेना पर

ध्रुव हेलीकॉप्टरों पर सबसे ज्यादा निर्भरता 11.5 लाख सैनिकों वाली भारतीय थल सेना की है, जिसके पास 180 से अधिक एएलएच हैं, जिनमें 60 हथियारबंद वर्जन 'रुद्र' शामिल हैं। वायुसेना के पास 75, नौसेना के पास 24 और तटरक्षक बल के पास 19 एएलएच हैं। इन 5.5 टन वजनी हेलिकॉप्टरों को 2002 से शामिल किया गया और वे सैन्य अभियानों का मुख्य आधार रहे हैं। सेना ने अकेले इन विमानों से 2023-24 में लगभग 40,000 घंटे की उड़ानें भरीं। 'ध्रुव' हेलीकॉप्टरों की ग्राउंडिंग इस साल 5 जनवरी को गुजरात के पोरबंदर में तटरक्षक बल के एक हेलीकॉप्टर के दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद शुरू हुई। इस हादसे में दो पायलटों और एक एयरक्रू डाइवर की मौत हो गई थी। इसके बाद से सभी एएलएच हेलीकॉप्टर ग्राउंड कर दिए गए हैं। जांच में यह पाया गया कि दुर्घटनाग्रस्त हेलीकॉप्टर में 'स्वैशप्लेट फ्रैक्चर' की समस्या थी, जो पायलटों के कंट्रोल खोने की वजह बनी। अधिकारियों ने बताया कि अन्य एएलएच हेलीकॉप्टरों में भी ऐसे ही मैटीरियल फेल होने के संकेत मिले हैं। हालांकि एएलएच अब तक इस खामी की वजह स्पष्ट नहीं कर पाया है।

19 साल बाद फिर एक साथ आ सकते हैं राज और उद्धव

राज ठाकरे ने कहा- मतभेद बहुत छोटी, महाराष्ट्र बड़ी बात

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे और राज ठाकरे एक बार फिर साथ आ सकते हैं। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना चीफ राज ठाकरे ने शनिवार को इस बात का संकेत दिया। राज ठाकरे ने कहा- हमारे बीच राजनीतिक मतभेद हैं, विवाद हैं, झगड़े हैं, लेकिन यह सब महाराष्ट्र के आगे बहुत छोटी चीज हैं। महाराष्ट्र और मराठी लोगों के हित के लिए साथ आना कोई बहुत बड़ी मुश्किल नहीं है। राज ठाकरे ने अभिनेता और निर्देशक महेश मांजरेकर के यू-ट्यूब चैनल पर यह बातें कहीं। महेश मांजरेकर ने राज से उद्धव के साथ गठबंधन पर सवाल किया था। इस पर राज ठाकरे ने कहा कि किसी बड़े मकसद के आगे हमारे बीच की लड़ाइयां छोटी हैं। इधर उद्धव का भी रिएक्शन आया है, उन्होंने कहा कि मेरी तरफ से कभी कोई झगड़ा नहीं था।

शिंदे के सवाल पर बोले- किसी और के अधीन काम नहीं करूंगा

एकनाथ शिंदे के सत्ता में आने और ऐतराज की बात पर राज ने कहा, पहली बात तो यह कि शिंदे का जाना या विधायकों का टूटना राजनीति का अलग हिस्सा बन गया। जब मैंने शिवसेना छोड़ी तो कई विधायक और सांसद मेरे पास आए। लेकिन मेरे मन में एक ही बात थी कि अगर बालासाहेब को छोड़ दूंगा तो किसी और के अधीन काम नहीं करूंगा। उस समय यही स्थिति थी। उन्होंने कहा, जब मैं शिवसेना में था तो मुझे उद्धव के साथ काम करने में कोई आपत्ति नहीं थी।

राहुल के चक्कर में बुरी तरह फंस चुकी है कांग्रेस

- कर्नाटक में आगे कुआं पीछे खाई वाली बन गई स्थिति

बीजेपी हमलावर, जाति जनगणना में फंसी सिद्धा सरकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। कर्नाटक में कांग्रेस पार्टी और मुख्यमंत्री सिद्धारमैया एक मुश्किल स्थिति में फंस चुके हैं। यह मुश्किल जाति जनगणना को लेकर है। पार्टी नेता राहुल गांधी इस जाति जनगणना का समर्थन कर रहे हैं और सिद्धारमैया उनके इस अभियान को लागू करने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन, अब यह उनके लिए ही मुसीबत बन गई है। जाति जनगणना की रिपोर्ट पर उनके अपने ही मंत्रिमंडल में मतभेद हैं। डेटा को लेकर भी कई सवाल उठाए जा रहे हैं। बीजेपी इस मुद्दे पर सरकार पर हमला कर रही है। लोगों में भी इस रिपोर्ट को लेकर शंका और संदेह भरे पड़े हैं। ऐसे में मुख्यमंत्री सिद्धारमैया के लिए आगे कुआं

और पीछे खाई वाली स्थिति बन गई है। कर्नाटक की राजनीति में इन दिनों उथल-पुथल मची हुई है। कांग्रेस पार्टी और मुख्यमंत्री सिद्धारमैया हर कदम सावधानी से रख रहे हैं। इसकी वजह है जाति जनगणना को लेकर उठा विवाद। राहुल गांधी इस जाति जनगणना का समर्थन कर रहे हैं और लगता है कि उन्हें ही खुश रखने के लिए सिद्धारमैया इसे जल्द लागू करने की कोशिश कर रहे हैं। राहुल पहले से ही जाति जनगणना को मुद्दा बनाने की कोशिश में हैं।

संकट मोचन संगीत समारोह

देश की दूसरी महिला सारंगी वादक: गौरी बनर्जी सती

राजेन्द्र शर्मा
(कला समीक्षक एवं उप्र सरकार में अधिकारी)

भारतीय शास्त्री य संगीत की परम्पररा में सारंगी वाद्य पर पुरुष कलाकारों का आधिपत्य् रहा है, इसे सबसे पहले बीती सदी के सातवें दशक में ख्या,त सारंगी वादक पंडित राम नारायण की पुत्री अरुणा कल्लेत ने तोडा था। अरुणा कल्ले बीते लगभग चार दशकों से कनाडा जा बसीं।

इस रिक्तोता को समाप्त। करने का बीडा जमशेदरपुर (झारखंड) निवासी गौरी बनर्जी सती ने उठाया और आज युवा गौरी बनर्जी सती का नाम देश भर में देश की दूसरी महिला सारंगी वादक के रुप में जाना जाता है। वो पिछले साल भी इस समारोह में आई थीं। तब उन्होंने समारोह की छह निशाओं में नौ कलाकारों विदुषी कंकणा बनर्जी, नंदिनी बेडेकर, मीनाक्षी मजूमदार, दिवाकर कश्य्प, पंडित सौनक अभिषेकी, पंडित जयतीर्थ मेचुंडी, पंडित नीरज पारिख के साथ प्रभावशाली संगत की। संकट मोचन संगीत समारोह के 102वें आयोजन में दूसरी हाजिरी लगाने गौरी बनर्जी सती वाराणसी आई हुई हैं और इस बार पंडित अजय पोहनकर (मुंबई), रोहित पवार (दिल्ली), श्रीमती सोहनी राय चौधरी (कलकत्ताा) पंडित नीरज पारीख (अहमदाबाद) के साथ समारोह की प्रथम व द्वितीय निशा में प्रस्तुतति दे चुकी हैं। गौरी चौथी निशा (19 अप्रैल) को विदुषी कंकना बनर्जी के साथ संगत करेंगी।

जमशेदपुरके साकची स्थित पेनार रोड के टाटा स्टील कंपनी के क्वा र्टर में रहने वाले ख्यात तबला वादक पं. किशोर बनर्जी और उनकी सितार वादक पत्नीक तंद्रा बनर्जी के घर आंगन में जन्मीत गौरी को शास्त्रीतय संगीत घुटटी में मिला है। इस मायने में वह अपने परिवार की चौथी पीढी की कलाकार हैं। छोटी बच्चीर गौरी सुबह शाम अपने पिता पं. किशोर बनर्जी को तबले पर और मां तंद्रा को सितार पर रियाज करते इन वाद्यों के प्रति आक.र्षित हुई किन्तुर सितार वादक उनकी मां श्रीमती तंद्रा बनर्जी इलेक्ट्रॉनिक्स वाद्य यंत्रों की बढती मांग और सारंगी की उपेक्षा से चिंतित थी। अपनी इस चिंता का हरण तंद्रा बनर्जी ने पांच बरस की अपनी बेटी गौरी के नन्हे हाथों में गज (सारंगी के तारों को रगड़ देने वाला उपकरण) पकड़वा कर तारों को छेडना़ सिखाया। घर पर ही अभ्या स करते करते गौरी सारंगी में खोई रहती। सारंगी हाथ में पकड जब घर से बाहर निकली तो 'एश मेये जनों कथा नेई' (यह सब लड़कियों के बूते का नहीं) जैसे तानों ने गौरी को सारंगी के प्रति प्रतिबद्धता से भर दिया।और गौरी ने ठान लिया कि वह जीवन में और कुछ बने न बने, लेकिन सारंगी वादक जरुर बनेगी।

गौरी बनर्जी

गौरी बनर्जी की इस प्रतिबद्वता को परवान बनारस से निकलकर रांची जा बसे गुणी सारंगी वादक पं.काशीनाथ मिश्र व दिल्ली के दिग्गज उस्ताद साबरी खां साहब ने चढ़ाया। सारंगी के प्रति अपने प्रेम को बताते हुए गौरी कहती है कि %सारंगी को बचाना है तो ऐसे ही जतन केसाथ संगीत से जुड़े घरानों को घरों के कोने में पड़ी धूल फांक रही सारंगी की गर्द झाड़कर उसे बैठकों तक लाना होगा। 'ए' ग्रेड आर्टिस्टस के रुप मे स्थातपित गौरी बनर्जी दूरदर्शन व आकाशवाणी के पांच दर्जन से अधिक राष्ट्रीय संगीत समारोहों, इंदौर के प्रतिष्ठापरक संगीत उत्सव राग आमिर, उदयपुर के महाराणा संगीत कुंभ, कालिदास समारोह (गुजरात) में अपनी प्रस्तुदति दे चुकी है। गौरी बनर्जी की सारंगी के प्रति बेपनाह मोहब्बरत का नतीजा साल 2020 में अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की भारत यात्रा के समय सामने आया। जब गौरी बनर्जी को राजधानी दिल्ली के हैदराबाद हाउस में राष्ट्रपति ट्रंप व मोदी के समक्ष सारंगी वादन का मौका मिला। गौरी की सारंगी प्रस्तुसति के बाद राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप बेसाख्तात कह उठे ÷इंट्स फंटास्टिक, इट्स वेलडन।÷ गौरी के सारंगी वादन से मंत्रमुग्ध ट्रंप ने गौरी के साथ सेल्फी ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी गौरी के वादन की भूरि भूरि प्रशंसा की।

गौरी बनर्जी सती ने सारंगी के साथ साथ अपनी शिक्षा पर पूरा ध्यानन दिया। वे फलस्वशरुप चार्टर्ड एकांउटेंट हैं और हल्वा रैनी के मूल निवासी उनके जीवन साथी पारितोष सती भी चार्टर्ड एकांउटेंट हैं। गौरी को सबसे अधिक संतोष और खुशी अपने पिता पं. किशोर बनर्जी के साथ संगत करने में मिलती है। बाप-बेटी की इस जोड़ी नेकई कार्यक्रमों में शिरकत करते हुए नायाब युगलबंदी से सबको मोहित किया है। सफर के दौरान सारंगी को अपने गोद में लेकर बैठना उनका शगल है। वह कहती है कि सारंगी को इतना सम्माहन क्यों न दूं आखिर सारंगी से ही तो मेरी पहचान है। मैं अपने माता पिता के समान सारंगी का भी सम्माकन करती हूं।

वर्तमान में सारंगी की उपेक्षा से दुखी गौरी बनर्जी सती कहती है कि %आज अस्तित्व के संकट से गुजर रहा सबसे सुरीला बाजा सारंगी नई पौध को बड़ी उम्मीद से आवाज दे रहा है। देश में प्रतिभाओं की कमी नहीं मगर ग्लैमर और पैसे की अंधी दौड़ ने राहें बदल दी हैं। इसमें पहल संगीत घरानों की ओर से होनी चाहिए, अन्य विधाओं से कोई होड़ नहीं किंतु सारंगी कहीं खूंटी पर न लटक जाए इसकी चिंता इन घरानों की जिम्मेदारी है।%

कलेक्टर ऑफिस के बाहर विश्व हिंदू परिषद का प्रदर्शन

पश्चिम बंगाल में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार व नरसंहार का किया विरोध

इंदौर (एजेंसी)। विश्व हिंदू परिषद के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने शनिवार को कलेक्टर ऑफिस के बाहर धरना प्रदर्शन किया। पश्चिम बंगाल में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार और नरसंहार को लेकर ये प्रदर्शन किया गया। राजवाड़ा पर बड़ी संख्या में विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल के कार्यकर्ता और समाज प्रमुख एकत्रित हुए और यहां से पैदल कलेक्टर ऑफिस पहुंचे। जहां उन्होंने राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन दिया।

विश्व हिंदू परिषद के मंत्री यज्ञेश राठी, प्रचार प्रमुख गन्नी चौकसे एवं अन्नू गहलोत ने बताया कि वक्फ कानून के विरोध की आड़ में संपूर्ण बंगाल को जिस प्रकार हिंसा की आग में जलाया जा रहा है, हिंदुओं को प्रताड़ित किया जा रहा है, राष्ट्र विरोधी और हिंदू विरोधी तत्वों को निर्बाध रूप से अपने षड्यंत्रों को क्रियान्वित करने की खुली छूट दी जा रही है, उससे स्पष्ट लगता है कि बंगाल की स्थिति अत्यधिक चिंताजनक है। मुर्शिदाबाद से शुरू हुई यह भीषण हिंसा अब संपूर्ण बंगाल में फैलती हुई दिखाई दे रही है। शासकीय तंत्र दंगाइयों के सामने केवल निष्क्रिय ही नहीं अपितु कई स्थानों पर इनका सहायक या प्रेरक बन गया है। इससे पहले कि स्थिति नियंत्रण से बाहर हो जाए, केंद्र सरकार को प्रशासन का नियंत्रण व संचालन अपने हाथ में लेकर राष्ट्र विरोधी व हिंदू विरोधी तत्वों को उनके कुकर्मों के लिए कठोर सजा दिलानी चाहिए। उन्होंने कहा 11 अप्रैल को वक्फ कानून के विरोध के नाम पर किया गया हिंसक प्रदर्शन कानून बनाने वाली सरकार के विरोध में नहीं अपितु हिंदुओं पर हिंसक आक्रमण के रूप में था, जबकि हिंदू समाज की इस कानून के निर्माण में कोई भूमिका नहीं थी और यह एक शुद्ध संवैधानिक प्रक्रिया थी। उनका आरोप है कि इसका स्पष्ट अर्थ है कि वक्फ तो केवल बहाना था, असली उद्देश्य मुर्शिदाबाद को हिंदू शून्य बनाना था। इस उन्मादी जिहादी भीड़ ने हिंदुओं के 200 से अधिक घरों और व्यवसायिक दुकानों को लूटकर जलाया, सैकड़ों हिंदुओं को बुरी तरह घायल किया व तीन नागरिकों की निर्मम हत्या की गई।

परिणाम स्वरूप 500 से अधिक हिंदू परिवारों को मुर्शिदाबाद से पलायन करना पड़ा। विश्व हिंदू परिषद के पदाधिकारियों ने ममता बैनर्जी पर भी निशाना साधा। पदाधिकारियों ने ज्ञापन के माध्यम से राष्ट्रपति से मांग की है कि साम्प्रदायिक सद्भाव बनाए रखने के लिए आप अविलंब और त्वरित कार्रवाई करेंगी।

बॉलीवुड एक्टर-डायरेक्टर अनुराग की इंदौर में शिकायत

ब्राह्मणों पर की टिप्पणी, सीएम से एमपी में फिल्म फुले पर बैन की मांग

इंदौर (एजेंसी)। मशहूर फिल्म डायरेक्टर अनुराग कश्यप के खिलाफ इंदौर के सामाजिक कार्यकर्ता नीरज याग्निक ने पलासिया थाने में शिकायत की है। याग्निक ने कहा कि देश में इस समय तनावपूर्ण माहौल बना हुआ है। सुप्रीम कोर्ट में वक्फ पर चर्चा चल रही है। बंगाल के हालात किसी से छिपे नहीं है। ऐसे समय में अनुराग कश्यप की ओर से निम्न स्तरीय टिप्पणी ब्राह्मण समाज के खिलाफ की गई है। मुझे लगता है कि इनकी टिप्पणी देशद्रोह, राष्ट्रद्रोह और धर्मद्रोही है। जबकि ब्राह्मण तो जन्म से लेकर मृत्यु तक सारे कर्मकांडों में समग्र हिंदू समाज के साथ है। याग्निक ने कहा- मेरी भावनाएं आहत हुई हैं, सिर्फ इसलिए नहीं कि मैं ब्राह्मण हूं। सबसे पहले मैं एक देशभक्त भारतीय हूं। उसके बाद मैं हिंदू हूं, और ब्राह्मण उसके बाद हूं। भारतीय होने के नाते मेरी भावनाएं आहत हुई हैं।

सीएम से करेंगे मांग, एमपी में फिल्म रिलीज न होने दें- नीरज याग्निक ने कहा कि मैं सभी धर्मों और समाज से चाहूंगा कि जो ये देश को तोड़ने की बात कर रहे हैं, इनके खिलाफ सभी को एक होना चाहिए। मैंने शिकायत की है। मुझे 100 प्रतिशत विश्वास है एफआईआर दर्ज हो जाएगी। हमने सीएम को भी एक कॉपी भेजी है।

फिल्म फुले को लेकर ये विवाद हुआ है। हम उनसे ये भी मांग करेंगे कि इस तरीके की वर्षों पुरानी बातों को नए तरीके से पेश करने और समाज में कुछ गलतफहमी या दंगे भड़काने की कोशिश की जाए तो ऐसी फिल्म को मध्यप्रदेश में रिलीज न होने दें। मंत्री कैलाश विजयवर्गीय के संज्ञान में भी ये बात लाई जाएगी।

इंदौर में अनुराग के पुतले को नदी में बहाया- इंदौर में श्री परशुराम सेना ने बॉलीवुड डायरेक्टर अनुराग कश्यप के पुतले को खान नदी में बहा दिया। परशुराम सेना के प्रदेश अध्यक्ष अनूप शुक्ला ने कहा अनुराग ने ब्राह्मणों के खिलाफ जो टिप्पणी की वो उनकी गंदी मानसिकता को दिखाती है। ऐसे व्यक्ति को गंदे नाले के पानी में डाला गया।

इंदौर में पति से सवाल पूछने पर पत्नी से मारपीट

पति बोला-आज तू बच गई, दोबारा पूछा तो जान से खत्म कर दूंगा, केस दर्ज

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में एक पत्नी को अपने पति से सवाल पूछना भारी पड़ गया। सवाल पूछने पर पति नाराज हो गया और पत्नी के साथ गाली-गलौज करते हुए मारपीट कर दी। जिसमें पत्नी को गाल, गले और पैर पर चोट आ गई। परिवार के अन्य लोगों ने इस विवाद में बीच-बचाव किया। इसके बाद पत्नी थाने पहुंची और पति के खिलाफ शिकायत कर दी। यह मामला एरोड्रम थाना क्षेत्र का है। यहां के रूपनगर, छोटा बांगड़दा रोड निवासी चंचल साहू की शिकायत पर पुलिस ने उसके पति आयुष साहू के खिलाफ केस दर्ज किया है। चंचल ने पुलिस को बताया कि घटना शुक्रवार की है। पति के घर आने पर मैंने उनसे पूछा कि आप रातभर से कहां थे? घर क्यों नहीं आए? तो इस पर मेरे पति आयुष कहने लगे कि मैं कहीं भी रहूं, कहीं भी जाऊं, तुमसे उसका कोई मतलब नहीं होना चाहिए। वे मेरे साथ गाली-गलौज करने लगे। गालियां देने से मना करने पर पति ने हाथ, मुक्कों से मारपीट की, जिससे महिला को गाल, गले और पैर पर चोट आई। मारपीट के दौरान महिला का देवर और काकी सास वहां आ गए और उन्होंने बीच-बचाव किया। घटना के बाद पति कहने लगे कि आज तो तू बच गई, आइंदा अगर मुझसे कुछ पूछा तो जान से खत्म कर दूंगा। महिला की शिकायत पर पुलिस ने पति के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

30 अप्रैल को इंदौर में निकलेगी भगवान परशुराम की शोभायात्रा

इंदौर (एजेंसी)। सनातन धर्म की शक्ति और एकता का प्रतीक भगवान श्री विष्णु के छठे अवतार भगवान श्री परशुराम की जयंती इस वर्ष इंदौर में अभूतपूर्व उत्साह और भव्यता के साथ मनाई जाएगी। सर्व ब्राह्मण युवा संगठन द्वारा आयोजित यह शोभायात्रा सनातन संस्कृति के गौरव को नई ऊंचाइयों तक ले जाएगी। शोभायात्रा शास्त्र और शस्त्र के समन्वय से सनातन धर्म की एकता का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करेगी। 30 अप्रैल को अक्षय तृतीया के दिन शाम 6 बजे दीनदयाल उपाध्याय चौराहा स्थित भगवान परशुराम मंदिर से शोभायात्रा प्रारंभ होगी। हजारों समाज जन इस शोभायात्रा का हिस्सा बनेंगे जो सनातन हिन्दू समाज की एकजुटता और अखंडता का संदेश देंगे। जिस प्रकार भगवान श्री राम केवल क्षत्रिय समाज के नहीं और भगवान श्री कृष्ण यादव समाज के नहीं बल्कि समस्त हिन्दू समाज के प्रेरणा स्त्रोत हैं।

मेट्रो का निरीक्षण करने पहुंचे मंत्री विजयवर्गीय

ट्रायल के दौरान बोले- इंदौर मेट्रो का शुभारंभ करने पीएम मोदी आएंगे

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में मेट्रो का काम तेज गति से चल रहा है। प्रॉयोरिटी कॉरिडोर पर मेट्रो कामर्शियल रन के लिए तैयार है। सीएमआरएस टीम की तरफ से भी मेट्रो को हरि झंडी मिल गई है। हालांकि मेट्रो का कामर्शियल रन कब से शुरू होगा यह अभी तय नहीं हुआ है, लेकिन इसका शुभारंभ पीएम मोदी के हाथों होगा।

नगरीय विकास एवं आवास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने शनिवार को सांसद शंकर लालवानी और महापौर पुष्य मित्र भार्गव के साथ मेट्रो का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि मेट्रो का शुभारंभ पीएम मोदी के हाथों किया जाएगा। वहीं हमारी कोशिश है कि दिवाली तक पूरे 17 किमी के रूट पर मेट्रो चलने लगे।

मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, मेयर पुष्य मित्र भार्गव और सांसद शंकर लालवानी ने मेट्रो ट्रेन का सफर भी किया। वह गांधी नगर स्टेशन से 5.9 किलोमीटर दूरी पर स्थित मेट्रो के स्टेशन तक पहुंचे। अफसरों ने सफर के दौरान मेट्रो कोच की खूबियां बताईं। मंत्री विजयवर्गीय ने अफसरों से कहा कि मेट्रो के संचालन के लिए मंजूरी मिल चुकी है। अब जल्दी ही इसकी सौगात शहरवासियों को दी जाए। मंत्री दोपहर 12 बजे मेट्रो ट्रेन में सवार हुए और हर मेट्रो स्टेशन पर उतरे। उन्होंने सभी स्टेशन पर मिलने वाली यात्रियों की सुविधा की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि सफर वाकई अच्छा रहा है। यह लोगों के सफर को और सुविधाजनक बनाएगी। अब अगला लक्ष्य मेट्रो का ट्रायल रन रेडिसन चौराहे तक करने का है। इसके लिए अफसरों को निर्देश दिए गए हैं।

मेट्रो को देखने लोग ज्यादा आएंगे

मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने मेट्रो का निरीक्षण करने के बाद प्रॉयोरिटी कॉरिडोर को लेकर कहा कि यह छोटे रूट पर लोगों की सुविधा तो बन रही है, लेकिन लोग देखने और घूमने ज्यादा आएंगे। पहला एक्सपीरियंस करेंगे मेट्रो का, इसलिए निश्चित रूप से पीएम मोदी जब भी सीएम को समय देंगे तब हम इसका विधिवत उद्घाटन करेंगे और उसके बाद से इंदौर के नागरिक इस ट्रेन को एंजॉय कर सकेंगे। विजयवर्गीय ने कहा कि मेट्रो का काम बहुत तेज चल रहा है हमें विश्वास है कि दिवाली पर हम 17.5 किमी का ट्रायल रन करेंगे।

शिवराज ने किया था मेट्रो का ट्रायल

इंदौर में विधानसभा चुनाव के पहले मेट्रो का ट्रायल रन पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने किया था। इसके लिए इंदौर में मेट्रो के बड़ौदा के प्लांट से कोच आए थे। मेट्रो ट्रेक के अलावा कोच का ट्रायल रन हो गया है, वहीं बाद में अलग-अलग स्पीड से ट्रेन को चलाकर देखा गया। रेलवे की तरफ से सेफ्टी आडिट भी किया गया।

'प्रबोधन' में मैनेजमेंट गुरु एन रघुरमन ने कहा-

अच्छा स्वास्थ्य केवल शरीर से नहीं, बल्कि विचारों से भी जुड़ा होता है...

इंदौर। अच्छा स्वास्थ्य केवल शरीर से नहीं, बल्कि विचारों से भी जुड़ा होता है। उन्होंने कहा कि यदि हम दिन की समाप्ति पर सोने से पहले अगले दिन के लिए कार्यों की सूची बनाएं और सकारात्मक सोच के साथ नींद लें, तो दिनचर्या अधिक व्यवस्थित और संतुलित बनती है। यह बात आरोग्य भारती भोपाल महानगर द्वारा आयोजित मासिक प्रबोधन कार्यक्रम में मैनेजमेंट गुरु एन रघुरमन ने कही।

वे स्वास्थ्य प्रबंधन से जीवन प्रबंधन विषय पर अपना उद्बोधन दे रहे थे। अपेक्स बैंक परिसर स्थित समन्वय सभागृह में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रमुख सचिव (स्वास्थ्य) संदीप यादव ने की। संदीप यादव ने कहा कि प्रदेश सरकार स्वास्थ्य के क्षेत्र में बहुआयामी प्रयास कर रही है, जिसमें आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों के साथ-साथ आयुर्वेद, योग, नेचुरोपैथी जैसी भारतीय चिकित्सा पद्धतियों को भी समान महत्व दिया जा रहा है।

तापमान 41.7 डिग्री तक पहुंचा

सामान्य से 3 डिग्री ज्यादा, सुबह से ही तेज धूप; आज पारा 42 डिग्री पार जाने के आसार

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में गर्मी लगातार बढ़ती जा रही है। मौसम का मिजाज सुबह से ही काफी तीखा था। दिनभर गर्म हवाएं चलती रहीं, जिसके चलते अधिकतम तापमान 41.7 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया, जो सामान्य से 3 डिग्री अधिक है। यह पिछले पांच सालों में दर्ज किया गया सबसे अधिक तापमान है।

इन दिनों सुबह से ही धूप चुभने लगती है और दोपहर तक गर्मी असहनीय हो जाती है। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार, आने वाले तीन दिन और अधिक गर्म रहने की संभावना है। आज दिन का तापमान 42 डिग्री सेल्सियस या उससे अधिक रह सकता है। इंदौर में रात का तापमान भी सामान्य से अधिक बना हुआ है। शुक्रवार को न्यूनतम तापमान 24.4 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया, जो सामान्य से 3 डिग्री अधिक रहा। पिछले पांच दिनों से रात का तापमान 24 से 25 डिग्री सेल्सियस के बीच बना हुआ है, जिससे रातों में भी गर्मी महसूस की जा रही है।

तेज गर्म हवाएं और तीखी धूप

मौसम विभाग के अनुसार, गर्म हवाओं के चलते तापमान में बढ़ोतरी हो रही है। सुबह से ही तेज धूप निकलने लगती है और दोपहर 12 बजे के बाद गर्मी और ज्यादा बढ़ जाती है। इस कारण दिन के साथ-साथ रातें भी तपिश भरी हो गई हैं। मौसम वैज्ञानिक अभिजीत चक्रवर्ती के मुताबिक, तीन दिन बाद तापमान में हल्की गिरावट आ सकती है, लेकिन फिलहाल गर्मी का असर बना रहेगा।

कचरा फेंकने की बात पर भिड़े पड़ोसी

ईंट से सिर फोड़ा, महिलाओं को भी लगी चोटें; पुलिस ने दोनों पक्षों पर दर्ज किया केस

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के एमआईजी थाना क्षेत्र स्थित नादिया नगर में छत पर कचरा फेंकने को लेकर दो पड़ोसी परिवारों के बीच जमकर विवाद हो गया। देखते ही देखते बात गाली-गलौज से मारपीट और ईंट-पत्थर चलने तक पहुंच गई। दोनों पक्षों ने एक-दूसरे पर हमले और गंभीर चोट पहुंचाने के आरोप लगाए हैं। पुलिस ने दोनों की शिकायतों पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

छत पर पड़ोसी ने कचरा फेंका

एमआईजी पुलिस के मुताबिक, अशोक कुशवाह निवासी नादिया नगर ने शिकायत में बताया कि उनके घर की छत पर पड़ोसी जितेंद्र ओझा ने कचरा फेंका था। जब उन्होंने इस पर आपत्ति जताई तो जितेंद्र और मीना ने उनसे बहस शुरू कर दी। बहस के दौरान जितेंद्र ने उनके साथ मारपीट शुरू कर दी। मीना ने ईंट उठाकर उनके सिर पर मार दी, जिससे उन्हें गंभीर चोट आई और खून बहने लगा। इस दौरान बीचबचाव करने आई अशोक की पत्नी रेखा को भी ईंट मार दी गई, जो उसके पैर में लगी। इसके बाद उन्हें जान से मारने की धमकी भी दी गई। मामले में अशोक कुशवाह की शिकायत पर जितेंद्र ओझा, नत्थू ओझा और मीना के खिलाफ केस दर्ज किया गया है।

ईंट से हमला, खिड़कियों के कांच भी फोड़े

दूसरी ओर, मनोज शर्मा ने पुलिस को शिकायत दी कि उनके ससुराल के पड़ोसी अशोक कुशवाह ने कचरा फेंकने की बात को लेकर उनके साले जितेंद्र के साथ गाली-गलौज की और मना करने पर सरिए से हमला कर दिया। सरिया जितेंद्र के हाथ में लगा। जब सास संध्या और साली मीना बीचबचाव करने आईं, तो अशोक ने संध्या के सिर पर ईंट मार दी, जिससे खून बहने लगा। इसी दौरान अशोक का बेटा अंकित भी मौके पर पहुंच गया और उसने मीना को ईंट मार दी, जिससे उसे भी चोट आई। मनोज का आरोप है कि दोनों ने मिलकर घर की खिड़कियों पर पत्थर फेंके, जिससे कांच टूट गए।

इंदौर में सोमवार से 12 बजे तक खुलेंगे स्कूल

कलेक्टर ने जारी किया आदेश, नर्सरी से आठवीं तक के स्कूलों पर लागू होगा

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में स्कूल अब दोपहर 12 बजे तक ही संचालित होंगे। लगातार बढ़ रही गर्मी के चलते कलेक्टर आशीष सिंह ने शनिवार को इस संबंध में आदेश जारी किया। यह आदेश नर्सरी से आठवीं तक के स्कूलों पर लागू होगा। इस आदेश का पालन सभी सीबीएसई, माध्यमिक शिक्षा मंडल, सरकारी, निजी और सभी अनुदान प्राप्त स्कूलों को करना होगा। यह आदेश तत्काल प्रभाव से लागू होगा। कलेक्टर ने जारी आदेश में कहा कि स्कूलों में मूल्यांकन का काम पहले की तरह चलता रहेगा। वह प्रभावित नहीं होगा। बता दें कि मप्र में 30 अप्रैल तक ही स्कूल खुले रहेंगे। इसके बाद गर्मी की छुट्टियां शुरू हो जाएंगी।महापौर पुष्पमित्र भार्गव ने भी बच्चों को लू से बचाने के लिए स्कूलों का समय बदलने के लिए कलेक्टर को पत्र लिखा था।

भस्म आरती दर्शन

भगवान महाकाल को त्रिनेत्र और त्रिपुण्ड के साथ भांग, चन्दन अर्पित कर राजा स्वरूप श्रृंगार

उज्जैन (एजेंसी)। विश्व प्रसिद्ध श्री महाकालेश्वर मंदिर में शनिवार तड़के भस्म आरती के दौरान चार बजे मंदिर के पट खुलते ही पण्डे पुजारी ने गर्भगृह में स्थापित सभी भगवान की प्रतिमाओं का पूजन कर भगवान महाकाल का जलाभिषेक और दूध,दही, घी,शक्कर फलों के रस से बने पंचामृत पूजन किया।

इसके बाद प्रथम घंटाल बजाकर हरि ओम का जल अर्पित किया गया। भगवान महाकाल को त्रिनेत्र और त्रिपुण्ड के साथ पुष्प भांग चन्दन अर्पित कर राजा स्वरूप श्रृंगार किया। कपूर आरती के बाद जटाधारी बाबा महाकाल को रजत मुकुट, त्रिपुण्ड अर्पित किया गया। श्रृंगार पूरा होने के बाद ज्योतिर्लिंग को कपड़े से ढांककर भस्मी रमाई गई।

जिला अस्पताल में 1 मिनट में हो रही 5 जांचें

अब नहीं लगेंगी लाइनें, डब्ल्यूएचओ तक पहुंचा इंदौर का इनोवेशन, एक क्लिक में हेल्थ रिपोर्ट तैयार

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के दो युवा इनोवेटर द्वारा तीन साल पहले बनाई गई मेडिकल डिवाइस 'अभय परिमिति' ने अब शहर के जिला अस्पताल और कलेक्टोरेट की जनसुनवाई में भी अपना काम शुरू कर दिया है। इस डिवाइस की मदद से अब ब्लड प्रेशर, हार्ट बीट, बॉडी टेम्प्रेचर, ऑक्सीजन लेवल और रेस्पिरेटरी रेट जैसी 5 जरूरी जांचें महज एक मिनट में हो रही हैं। डॉक्टरों और स्टाफ को इन पांच जांचों के लिए पहले काफी वक्त देना पड़ता था, जिससे मरीजों की लंबी कतारें लगती थीं। लेकिन इस डिवाइस के उपयोग से अस्पतालों में इलाज की प्रक्रिया तेज हो गई है। अब एक घंटे में 40 मरीजों की स्क्रीनिंग हो रही है, जबकि पहले इतनी ही संख्या (40) की जांच में करीब 10 घंटे लगते थे।

6.6 करोड़ की सीड फंडिंग, WHO में हो चुका है प्रेजेंटेशन

इंदौर के लोकांत जैन और सानिया जेसवानी ने 2020 में स्टार्टअप 'परटेंक टेक' की शुरुआत की थी। उन्होंने इस डिवाइस को एक पेटेंटेड एआई आधारित प्रोग्नॉस्टिक टेक्नोलॉजी पर विकसित किया है, जो एक डिजिटल डॉक्टर की तरह काम करती है। हाल ही में इस स्टार्टअप ने सीड फंडिंग राउंड में 6.6 करोड़ रुपए जुटाए हैं। यह मप्र में हेल्थकेयर डिवाइस सेक्टर के लिए अब तक की सबसे बड़ी राशि मानी जा रही है। अब तक कुल 8.5 करोड़ रुपए की फंडिंग मिल चुकी है। इस राउंड का नेतृत्व योर नेस्ट वेंचर कैपिटल ने किया, जबकि इसमें भारत सरकार के अटल इनोवेशन मिशन, विलग्रो फाउंडेशन और सांची कनेक्ट भी शामिल रहे।

पुण्यतिथि 20 अप्रैल पर विशेष

रमेश रंजन त्रिपाठी

शकील बदायूनी, बेहतरीन गीतकार

छह दशक पुरानी बात है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की मशहूर गजल गायिका बेगम अख्तर की ट्रेन बम्बई (अब मुंबई) से लखनऊ के लिए चलनेवाली थी कि तभी एक नौजवान आकर उन्हें कागज का टुकड़ा थमा देता है और फुर्सत में उसे पढ़ने की गुजारिश करता है। ट्रेन चल देती है और बेगम अख्तर साहिबा उस पर्चे को रख लेती हैं। अगली सुबह वे उस कागज पर लिखी गजल को पढ़कर ट्रेन में ही हारमोनियम पर उसकी धुन बनाने लगती हैं। बेगम अख्तर पर्चे पर लिखी उस गजल को आवाज बख्शकर अपने साथ शायर को भी शोहरत की बुलंदी पर पहुँचा देती हैं। गजल है, 'ऐ मोहब्बत तेरे अंजाम पे रोना आया' और शायर हैं शकील बदायूनी। यूँ तो शकील साहब को फिल्मी गीतकार के रूप में पहचान मिली लेकिन वे शायर कमाल के थे। इसका प्रमाण है कि मीर, ग़ालिब, मोमिन, फाकिर, दाग, जिगर मुरादाबादी जैसे दिग्गजों की रचनाओं को गाने वाली बेगम अख्तर जी ने शकील बदायूनी की कई गजलों को अपने कार्यक्रमों में प्रस्तुत कर वाहवाही बटोरी। उदाहरण के लिए, 'मेरे हमनफस मेरे हमनवां' भी शकील साहब की रचना है जिसे बहुत प्रसिद्धि मिली।

शकील मुंबई में फिल्मों में गाने लिखने का मौका तलाशते हुए ए.आर. कारदार और नौशाद से मिले। संगीतकार नौशाद ने उन्हें एक लाइन में अपनी काव्य प्रतिभा दिखाने के लिए कहा। शकील साहब ने लिखा 'हम दर्द का अफ़साना दुनिया को सुना देंगे, हर दिल में मोहब्बत की एक आग लगा देंगे।' मुरीद हुए नौशाद ने तत्काल कारदार की फिल्म 'दर्द' (1947) के लिए उन्हें अनुबंधित कर लिया। बेहतरीन संगीत के कारण 'दर्द' हिट हो गई और नौशाद तथा शकील की ऐसी सफल जोड़ी बनी जिसने चौबीस सालों तक कई फ़िल्मों में एक से बढ़कर एक लाजवाब गीत दिए। 'दर्द' में उमा देवी, जो बाद में टुनटुन के नाम से मशहूर हुईं, का गाया गाना 'अफसाना लिख रही हूँ' आज भी संगीतप्रेमी बड़े चाव से सुनते हैं। विजय भट्ट अपनी फ़िल्म 'बैजू बावरा' (1952) के गाने कवि प्रदीप से लिखाना चाहते थे। नौशाद के अनुरोध पर वे शकील बदायूनी से मिले और 'बैजू बावरा' का गीत-संगीत हिंदी सिनेमा की अनमोल धरोहर बन गया। फिल्मों में सिचुएशन के मुताबिक गाने बनाने पड़ते हैं। खुशी, गम, उदासी, मजाक, मिलन, विरह, प्रेम, वात्सल्य, देशप्रेम और न जाने कितनी भावनाओं की अभिव्यक्ति तीन मिनट के गाने में करनी पड़ती है। सोलो, डुएट, कोरस, भजन, गीत, गजल, कव्वाली, कैबरे जैसी अनेक विधाओं के लिए शब्द-संयोजन करना पड़ता है। शकील साहब इन सभी कसौटियों पर पूरी तरह खरे उतरे।

शकील बदायूनी के नाम एक शानदार उपलब्धि दर्ज है। उन दिनों बॉलीवुड में फिल्मफेयर पुरस्कारों को ऑस्कर

अवॉर्ड जैसी प्रतिष्ठा प्राप्त थी। शकील साहब अकेले ऐसे फिल्मी कवि हैं जिन्होंने सर्वश्रेष्ठ गीतकार के फिल्मफेयर पुरस्कारों की हैट्रिक लगाई है। सन् 1961 में 'चौदहवीं का चांद' के शीर्षक गीत, 1962 में 'घराना' के 'हुस्नवाले तेरा जवाब नहीं' और 1963 में 'बीस साल बाद' के 'कहीं दीप जले कहीं दिल' के लिए उन्हें बेस्ट लिरिसिस्ट का अवार्ड मिला। खास बात यह है कि शकील बदायूनी के सबसे ज्यादा नग़मों को लयबद्ध करनेवाले नौशाद इन तीनों गीतों के संगीतकार नहीं हैं। शकील साहब ने नौशाद के अलावा रवि, हेमंत कुमार, एस.डी. बर्मन, सी. रामचंद्र, रोशन जैसे दिग्गजों के साथ भी बेहतरीन काम किया है। नौशाद साहब आज भी फिल्मी संगीतकारों की सूची में टॉप पोजिशन पर विराजमान हैं तो उसमें शकील बदायूनी का भी महतीं योगदान है। जब शकील साहब क्षयरोग से पीड़ित थे तब उनकी आर्थिक सहायता के लिए नौशाद जी ने उनसे तीन फ़िल्मों के लिए गीत लिखवाए और कई गुना अधिक फीस दिलवाई। केवल तिरपन साल की उम्र में दुनिया को अलविदा कह देनेवाले शकील बदायूनी साहब के अनेक यादगार गीतों में से कुछ का उल्लेख करने का लोभ संवरण नहीं हो रहा- प्यार किया तो डरना क्या, सुहानी रात ढल चुकी, मन तड़पत हरि दर्शन को आज, ओ दुनिया के रखवाले, मेरे महबूब तुझे मेरी मोहब्बत की कसम, लो आ गई उनकी याद, तू गंगा की मौज, मोहब्बत की झूठी कहानी पे रोए, आए न बालम वादा करके, न जाओ सैंया छुड़ा के बइँया, बेकरार करके हमें यूँ न जाइए, हुए हम जिनके लिए बदनाम, हमारे दिल से न जाना, इंसाफ का मंदिर है ये आदि आदि। 'परदा नहीं जब कोई खुदा से बंदों से परदा करना क्या' की उद्घोषणा करनेवाले शायर को विनम्र श्रद्धांजलि।

रिपोर्ट

लोकगायक सुन्दरलाल मालवीय और उदित तिवारी को भेराजी सम्मान

उज्जैन। भेराजी मालवा की लोक संस्कृति के संवाहक थे और मालवी बोली - भाषा के लिए अद्भुत कार्य कर पूरे मालवा और निमाड़ में छा गये थे। भेराजी का व्यक्तित्व और चरित्र जीवित किंवदंती बन गया था। भेराजी की लोकदृष्टि,देश की लोकदृष्टि रही और भेराजी ने आकाशवाणी को लोकवाणी बना दिया था।

ये विचार मालवा लोक कला एवं संस्कृति संस्थान द्वारा कालिदास अकादमी में आयोजित 38 वें भेराजी सम्मान समारोह में अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के कुलानुशासक प्रो.शैलेन्द्र कुमार शर्मा ने व्यक्त किये। भेराजी सम्मान का आयोजन भेराजी की पुण्यतिथि पर प्रतिवर्ष 18 अप्रैल को किया जाता है। आयोजन के सारस्वत अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार राकेश शर्मा ने कहा कि यह समय अपनी बोलियों को बचाने का समय है क्योंकि बोलियों में पीढ़ियों का विज्ञान सुरक्षित है। मालवी बोली के लिए भेराजी द्वारा किया गया कार्य धरोहर है। मुख्य अतिथि आकाशवाणी और दूरदर्शन के निदेशक ब्रह्मप्रकाश चतुर्वेदी ने कहा कि भेराजी ने मालवी और निमाड़ी बोली को सशक्त बनाते हुए आकाशवाणी को लोकप्रिय बनाया और भेराजी द्वारा कही गई मालवी और निमाड़ी जनकथाओं को आकाशवाणी आज भी प्रसारित कर रही है।

सम्मान प्रसंग के अंतर्गत ख्यात लोकगायक और माचविद सुन्दरलाल मालवीय एवं आकाशवाणी के उद्घोषक उदित तिवारी को भेराजी सम्मान से अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया। सम्मान पत्र का वाचन डॉ. गरिमा दवे और डॉ. अभिलाषा शर्मा ने किया। अतिथियों ने शाल,श्रीफल ,सम्मान पत्र और स्मृति चिन्ह प्रदान कर श्री मालवीय और श्री तिवारी को सम्मानित किया। स्वागत भाषण संस्था के संरक्षक वरिष्ठ साहित्यकार श्री श्रीराम दवे ने दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के तहत रामचंद्र गांगोलिया एवं साथियों द्वारा गणेश वंदना , मालवी भजन प्रस्तुत किये गये। कलायोगिनी नृत्य संस्था की निर्देशक वीणा व्यास के निर्देशन में सामूहिक लोकनृत्य की भव्य प्रस्तुति की गई और जयवी व्यास ने एकल नृत्य से प्रशंसा पाई।

प्रारम्भ में अतिथियों ने भेराजी, समारोह के संस्थापक कैलाश वर्मा एवं सुमन वर्मा के चित्रों पर पुष्पांजलि अर्पित की। अतिथियों का स्वागत संरक्षक श्रीराम दवे, अध्यक्ष डॉ. हरीशकुमार सिंह, सचिव श्री जयेश भेराजी, कमलेश वर्मा, देवेन्द्र वर्मा, रानी जयेश भेरा जी , तृप्ति दवे, अजय नागर , रमेश चन्द्र नायक आदि ने किया।

समारोह में प्रो. हरिमोहन बुधौलिया , संतोष सुपेकर , अशोक भाटी , शशांक दुबे , मुकेश जोशी , अनिल कुरेल , माया बदेका ,डॉ. तारा परमार , कृष्णा वर्मा , प्रकाश देशमुख , डॉ. पल्लवी किशन , ऋचु शुक्ल , संजय शुक्ल , अनूप बोरलिया , सुगनचंद जैन , विनोद चौरसिया आदि उपस्थित थे। आकाशवाणी इंदौर द्वारा सम्मान समारोह की रिकॉर्डिंग की गई जिसका प्रसारण आकाशवाणी से किया जायेगा। संचालन डॉ हरीशकुमार सिंह ने किया। आभार प्रदर्शन जयेश कैलाश भेराजी ने किया।

कविता

दुरुस्त वृद्ध

सुधीर कुमार सोनी

लिख दो
कि सारे दांत दुरुस्त हैं,
उस वृद्ध के और नाक पर
ऐनक नहीं चढ़ी है अभी
उसके पास उसके पिता का दिया हुआ
एक पुराना मटमैला जर्जर हुआ शब्दकोश है।

लिख दो
कि अभी घड़ी ने हथेली में घर नहीं बनाया है
धूप में जमीन पर पड़ती
दोनों हाथ की परछाई देखकर
बता देते हैं- समय ठीक ठीक ।

लिख दो
कि नीम के दातून से होती है सुबह,
उनकी और घूम
आते हैं दो कोस प्रतिदिन ।

लिख दो
की अधपके सफेद बाल हैं, जो धूप में
सफेद नहीं हुएं हैं।

लिख दो
कि आने वाले बसंत में उनकी उमर
निनानब्बे होगी,
यह उनकी दी जानकारी है।

लिख दो
की कमर झुकती है ,
पर झुकी नहीं है अभी ।

लिख दो
कि एक दशक बाद इस उम्र का
इतने चुस्त-दुरुस्त आदमी से , शायद ही
मुलाकात हो
हो सकता है, कि अखबार में
पढ़ने मिल जाए कभी ।

(लघुकथा)

प्रभुनाथ शुक्ल

धर्म और हिंसा

कॉफी हाऊस में दोस्त रेहान के इंतजार में बैठा देवेश हाल में हुई हिंसा पर बहुत व्यथित था। वह लोकतंत्र की शपथ लेने वाली सरकारों को कोंस रहा था। मन ही मन बुदबुदा रहा था। सरकारें लोकतंत्र के सुचारु संचालन की शपथ लेने के बाद अपना कर्तव्य भूल जाती हैं। वोटबैंक की आड़ में आम लोगों की जिंदगी के साथ मौत का खेल खेलती हैं। निरीह लोगों की मौत के बाद मुवावजे का नाटक करती हैं। उसके दिमाग में अनगिनत बातें गूंज रहीं थीं।

शहर के उस कॉफी हाऊस में देवेश और रेहान अकक्सर कॉफी पीने साथ-साथ बैठते थे। रेहान भी तय समय के मुताबिक कॉफी हाऊस पहुँच गया था दोस्त देवेश, को चिड़चिड़ा देख, रेहान का दिमाग उलझ गया।

क्या बात है देवेश, आज तुम रीलैक्स नहीं लग रहे। हाँ, रेहान कुछ बातें मुझे कचोट रहीं हैं।

बता मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ। रेहान ने देवेश से कहा था।

रेहान, हमारा-तुम्हारा मजहब क्या हिंसा, आगजनी और घृणा का संदेश देता है। हमने दुनिया के किसी भी धर्म ग्रंथ में मानवता के खिलाफ कोई शब्द नहीं देखा। फिर धर्म इतना हिंसक क्यों हो गया ?

छोड़ो यार, तुम भी आज कहाँ से फिजूल की बातें करने लगे। रेहान ने कहा था। वैसे समाज में फैलती इस घृणा को लेकर मैं भी दुःखी हूँ।

देवेश, तुम सच कहते हो, मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना। धर्म हमें घृणा, हिंसा और आगजनी कभी नहीं सीखता। यह सब हमें राजनीति सिखाती है। सत्ता सिखाती है। क्या तुमने कभी ईश्वर और अल्लाह को लड़ते हुए देखा है। ईश्वर क्या कभी मुझसे आकर कहता है कि तुम हमारी इबादत और पूजा करो। तुम हमारे लिए आपस में लड़ो ? तुम धर्म और समुदाय की आड़ में देश को तोड़ो ? तुम मंदिर तोड़ो या मस्जिद, ईश्वर और अल्लाह कभी कुछ नहीं कहते। फिर से हम तुम दोस्त हैं। कभी सामुदायिक हिंसा से हमारी तुम्हारी दोस्ती में फर्क पड़ा क्या। राजनीति हमेशा सत्ता के लिए जीती है। कभी अंग्रेज हमारे देश में फूट डालो और राज करो की नीति अपनाते थे। आज हमारी राजनीति वहीं काम कर रहीं है।

हम क्यों लड़ते हैं। क्योंकि हम एक दूसरे से डरते हैं, इसलिए लड़ते हैं। लड़ाई वहीं होती है जहाँ एक दूसरे के प्रति आपस में डर हो। वह डर किसी भी प्रकार का हो सकता है।

देवेश ! फिर हम और तुम कभी धर्म और समुदाय के नाम पर लड़े क्या। हमारे बीच में कभी धर्म और समुदाय आड़े आया क्या। हम ईद, होली और दिवाली एक साथ मिल कर मनाते हैं। पैंतीस साल ऐसी हिंसा में कभी कोई राजनेता मरता है क्या ? उसके बेटे के हाथ में तलवारें, बंदूक, बम, लाठी कभी दिखती है ? ऐसी हिंसा में मरने वाला हिंदू या मुसलमान कौन होता है। वहीं होता है जो किसी तरह अपनी जिंदगी गुजर-बसर कर रहा होता है।

यह सोचने वाली बात है देवेश ! सामुदायिक या धार्मिक हिंसा, धर्म की नहीं, हमारी सोच का नतीजा है।

कविता

फूल सेमल के

कमलेश कुमार दीवान

विछ गये हैं फूल,
सेमल के
लो आई गर्मियाँ ।
लो आई गर्मियाँ ।
सुर्ख ,कोमल,लाल पखुरियाँ
लिए रहती,
अनेकों तान छत वाली
बहुत ऊँची,
गगन छूती डालियाँ
खिल उठी हैं
हो के मतवाली।

छा गई मैदान पर,
रक्तिम छटाएँ
चलो नंगे पाँव तो,
वे गुदगुदाएँ
खदबदाती सी खड़ी
वेपीर लगती है,
खुशी के पल भरा पूरा
नीड़ लगती हैं।

ग्रीष्म भर उड़ती रहेगीं रेशे ..रेशे
जो कभी विचलित,
कभी प्रतिकूल लगती है।

विछ गयें हैं शूल,
तन...मन के
लो आई गर्मियाँ ।

विछ गये हैं फूल,
सेमल के
लो आई गर्मियाँ ।

तनुजा चौबे

मैं धरा की तरह मजबूत हूं
आसमां की तरह झुक कर आना होगा।

आना

स्थिर हो अपने वजूद को लेकर
मुझे इसी रूप में अपनाना होगा।
है धरोहर तुम्हारी चांद सितारों की

मैं धूल, तुम्हें टूट कर बिखर जाना होगा।
मेघा छाये या ना चमके बिजली सावन बनाकर
तुम्हें बरस जाना होगा।
भर लूंगी मैं भी आंचल रंग-बिरंगे फूलों से
मगर लौटने का वादा कर जाना होगा।

एहसासों की निर्मल धारा: एहसास कभी मिटा नहीं करते

पुस्तक समीक्षा

ओम वर्मा

समीक्षक

कविता लिखना अर्थात संवेदनशील सूक्ष्म दृष्टि से भावों को आत्मसात करके उन्हें अभिव्यक्त करना। अनेक भावनाओं का आत्म-अवलोकन करके उन्हें शब्द रूप देना... हृदय जो अपने आसपास की अनुभूतियों को महसूस करता है, उसे काव्यात्मक रूप में शब्दों में बांधना ही तो कविता है और नृपेन्द्र अभिषेक नृप इस विधा में अत्यंत पारंगत हैं। यह बात उनके काव्य संग्रह 'एहसास कभी मिटा नहीं करते' को पढ़ने के बाद पाठक सहज ही अनुभव करता है।

जिस भी भाव को वे छूते हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने उन एहसासों को स्वयं जिया है और फिर उन्हें शब्दों में ढाल दिया है। उनकी संवेदनशीलता इस संग्रह की आत्मा है। 'एहसास कभी मिटा नहीं करते' एक ऐसा काव्य संग्रह है जिसमें लेखक ने अनुभूतियों को आत्मीयता के साथ समेटकर काव्यात्मक अभिव्यक्ति दी है। यह संग्रह पाठकों को जीवन के विविध भावों से परिचित कराता है।

इस पुस्तक में जीवन के हर पक्ष, भावना और विषय को छूने का प्रयास किया गया है। यह 75 कविताओं की काव्यमाला है, जिसका प्रत्येक मोती संवेदनशीलता और नर्म एहसासों से स्पंदित है। इस संग्रह की पहली कविता 'शहर की सहर' गांव की सोंधी माटी और शहर की सामाजिकता को समेटते हुए पाठक को ग्रामीण जीवन की सौंधी सुगंध से परिचित कराती है।

फिर 'सपनों की बस्ती बह गई बाढ़ में' कविता में बेहद संवेदनशील शब्दों के माध्यम से बाढ़ की पीड़ा को प्रस्तुत किया गया है- पानी में डूबे घरों का बस अब मंजर है, हर कोई यहां बेबस और बंजर है, सपनों की बस्ती बह गई बाढ़ में, हर तरफ आंसू का फैला समंदर है।

वहीं 'शाश्वत प्रेम' कविता प्रेम की पारंपरिक धारणाओं से हटकर एक नई दृष्टि प्रस्तुत करती है - प्रेम इतना तीव्र है कि वह चाहने वाले के सपनों को भी तोड़ सकता है। 'मौन रहता हूं' कविता में पाठक एक कल्पनालोक में विचरण करता है, जहां प्रेम, जुगलबंदी और मनुहार का कोमल संसार आकार लेता है।

'बेरोजगारी का दाग' कविता युवाओं की पीड़ा को उजागर करती है- उनकी वेदना, उनके टूटते सपनों और सामाजिक अपेक्षाओं की गूंज बनकर उभरती है। और अंत में, शीर्षक कविता 'एहसास कभी मिटा नहीं करते' हृदय को फिर से सपनों की कोमल दुनिया में ले जाती है, जहां भावनाएं अमिट रहती हैं।

लेखक ने जीवन के प्रत्येक पहलू को बहुआयामी दृष्टिकोण से देखा है और पूरी गहनता व संवेदनशीलता से भावों को काव्य में निचोड़ कर प्रस्तुत किया है। नृपेन्द्र अभिषेक नृप का यह काव्य संग्रह हिंदी साहित्य प्रेमियों को निराश नहीं करता। इसकी पठनीय कविताएं पाठक के मन-मस्तिष्क में दीर्घकाल तक गूंजती रहती हैं। निःसंदेह, यह एक संग्रहणीय काव्य कृति है।

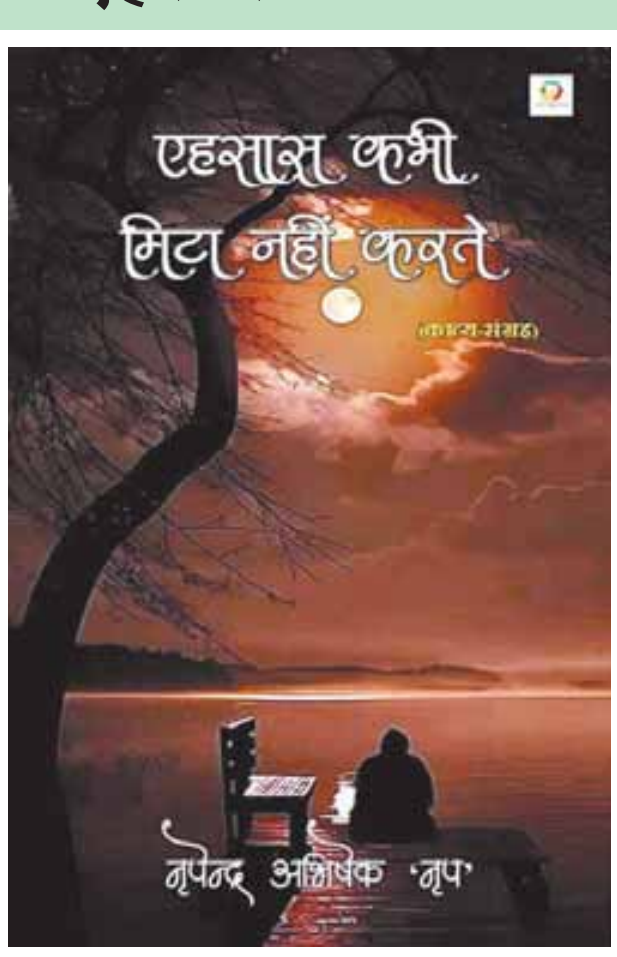

पुस्तक- एहसास कभी मिटा नहीं करते
लेखक-नृपेन्द्र अभिषेक ÷नृप÷
प्रकाशन- लायंस पब्लिकेशन, ग्वालियर
मूल्य- 180 रुपये

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) -विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

नंदलाल बोस और माटी के महक वाली कलाकृतियां

कुम्हारों द्वारा बनी वस्तुएं भी आपको बहुत ही लुभाती थीं। आपमें रह-रह कर एक वेग सा उठ जाता था कलाकारी का और कहीं भी रेखाचित्र बनाने लग जाते थे। चोरी छिपे कला की बारीकियां भी सीखते रहते थे। पंद्रह वर्ष में नंदलाल अध्ययन हेतु कलकत्ता चले गए, अध्ययन करते रहे पर मन था कि यहां रमता नहीं था। बांधे-बांधे बियाह कैसे संभव होता, बोस का भी मोहभंग हो गया था पढ़ाई से, पढ़ते तो थे पर बढ़ नहीं पाते थे, स्कूल बदलते रहे कि कहीं से तो आगे बढ़ सके पर रंगों से खेलने को आतुर कलाकार को रटंत शिक्षा कहां तक बांध पाती, नहीं बंधे बोस। कला हेतु परिवार राजी नहीं था तो शिक्षा हेतु नंदलाल। इन्हीं द्वंद्वात्मक परिस्थितियों से लगातार जूझते हुए एक दिन इनका विवाह सुधीरा देवी जी से हो गया पर नन्दलाल बोस को बनना तो कलाकार था आखिर कब तक कोई रोक पाता, नहीं रोक सका और अंत में 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत' वाली बात चरितार्थ हुई।

कला, साहित्य समाज का आईना तो होता है पर एक कलाकार बन पाना इतना आसान नहीं जितना कि और कुछ, स्वतंत्रता पूर्व तो और भी नहीं, कई लड़ाइयां एक साथ लड़नी पड़ती है एक इंसान को एक कलाकार बनने हेतु। नंदलाल बोस भी इन्हीं लड़ाकों में से थे। परिवार का बिल्कुल भी समर्थन नहीं था, पढ़ना बस किसी तरीके से ढो लेने वाली स्थिति में था किसी तरीके से कुछ हद तक पढ़ाई कर सके पर आगे जाना मुमकिन नहीं हो पा रहा था जबकि कला रग-रग में थी पर संग कोई नहीं था, मां खेत्रमनी देवी एक गृहिणी थीं, जो घर के कामकाज के साथ ही नंदलाल के लिए खिलौने और गुड़िया भी बना लिया करती थी। पूजा पंडालों को सजाने में भी बोस को बड़ा आनंद आता था। गांव और आसपास के लोक शैली के चित्र, लोक पद्धतियां,

कुम्हारों द्वारा बनी वस्तुएं भी आपको बहुत ही लुभाती थीं। आपमें रह-रह कर एक वेग सा उठ जाता था कलाकारी का और कहीं भी रेखाचित्र बनाने लग जाते थे। चोरी छिपे कला की बारीकियां भी सीखते रहते थे। पंद्रह वर्ष में नंदलाल अध्ययन हेतु कलकत्ता चले गए, अध्ययन करते रहे पर मन था कि यहां रमता नहीं था। बांधे-बांधे बियाह कैसे संभव होता, बोस का भी मोहभंग हो गया था पढ़ाई से, पढ़ते तो थे पर बढ़ नहीं पाते थे, स्कूल बदलते रहे कि कहीं से तो आगे बढ़ सके पर रंगों से खेलने को आतुर कलाकार को रटंत शिक्षा कहां तक बांध पाती, नहीं बंधे बोस। कला हेतु परिवार राजी नहीं था तो शिक्षा हेतु नंदलाल। इन्हीं द्वंद्वात्मक परिस्थितियों से लगातार जूझते हुए एक दिन इनका विवाह सुधीरा देवी जी से हो गया पर नन्दलाल बोस को बनना तो कलाकार था आखिर कब तक कोई रोक पाता, नहीं रोक सका और अंत में %मन के हारे हार है, मन के जीते जीत% वाली बात चरितार्थ हुई और धीरे-धीरे परिवार को मना लेने में सफलता हासिल हुई और सानिध्य मिला अवनींद्रनाथ टैगोर का जो उस समय कला में नई क्रांति हेतु काम कर रहे थे जिनके काम से नंदलाल बहुत प्रभावित थे।

कला विद्यालय में दाखिले के बाद से आप तो जैसे उसी दुनिया में रम से गये और नित नये कारनामों से लोगों को आश्चर्य चकित करते रहे सीखने के साथ ही अपने अलग शैली पर भी आप लगातार काम करते रहे थे। ग्रामीण परिवेश जो आपके मन में बसा हुआ था आपके कृतियों में उतरने लगा। आकृतियां स्वतंत्र थीं पर मिट्टी की महक बरकरार थी, मटमैला पृष्ठभूमि, लचकदार कद-काठी आपके कृतियों की पहचान बनी। नंदलाल के कृतियों में संश्लेषणात्मकता की छाप साफ नजर आती है। आधुनिक भारतीय कला के इतिहास में महान भूमिका वाले कलाकार नंदलाल अवनीन्द्रनाथ, रवीन्द्रनाथ, आनंद कुमार स्वामी, हैवेल, महात्मां गांधी जैसे प्रमुख विचारकों के विचारों को एक साथ समन्वित करते हुए, अपने कृतियों में मौलिकता को बचाते हुए, जन आंदोलन के साथ भी जुड़ सके। देश के परिस्थितियों और उस दौर के कला के परिस्थितियों दोनों को एक दिशा देने में इनके भूमिका को भी भुलाया नहीं जा सकता। बोस के कृतियों में शालीनता है, वर्णनात्मक पद्धति पर सृजित कृतियां लोगों के जेहन तक अपनी पहुंच आसानी से बना लेती हैं। सुलभ तरीके से भावों को पटल पर प्रवाहित करने का उनका अपना अंदाज था। वो तमाम आडंबरों से दूर ही रहा करते थे।

धनुष के साथ रति, बच्चे को नहलाती मां, शहनाई वाला, कमल के साथ महिला, अन्नपूर्णा, सरस्वती, शिव का विषपान, सती, अवनींद्रनाथ टैगोर का स्टूडियो, अर्द्धनारीश्वर, राधाकृष्ण, महिला चित्रकार सहित हजारों कृतियां आप निरंतर बनाते चले गये।

आप तकनीकी स्तर पर निरंतर नया करने की चाह तो रखते थे पर विषयवस्तु में ठेठपन रखना भी नहीं भूलते थे, विषय एवं शैली ग्रामीण होने से आपकी कृतियां ग्रामीणों हेतु धरोहर बन गई थीं खैर अब तो राष्ट्रीय धरोहर हैं। 1911 में प्रदर्शनी की शुरुआत करते

हुए आप राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचाने जाने लगे, आपकी कृतियां पेरिस, इंग्लैंड, जिनेवा जैसे प्रमुख देशों में भी प्रदर्शित हुई। भारतीय संविधान के मूल प्रति के अध्यायानुसार 22 चित्रों के साथ भी आपका नाम जुड़ा है जहां भारतीय संस्कृति और इतिहास को बखूबी उकेरा गया है जिसमें मोहनजोदड़ो, वैदिक काल, रामायण, महाभारत, बुद्ध उपदेश से लेकर हिमालय तक के चित्र सजे हैं। भारत रत्न और पद्म श्री जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कारों के प्रतीक चिन्ह सृजन का श्रेय भी आपको ही है।

प्राचीन भारतीय विचारों, शैली, लोक-लुभावन पद्धतियों से प्रभावित कलाकार नंदलाल बोस अजंता गुफाओं के भित्तिचित्रों से भी बहुत प्रभावित थे। उनके मन में रम सी गई थी अजंता, अजंता के प्रभाव ने उन्हें इस कदर प्रभावित किया था कि वे शास्त्रीय भारतीय संस्कृति को पुनर्जीवित करने की चाह रखने वाले कलाकारों और लेखकों के एक अंतरराष्ट्रीय समूह का हिस्सा बन गए थे और निरंतर भारतीयता को अपने कृतियों में बचाए रखे।ब्रिटिशों का विरोध करने के लिए महात्मा गांधी की गिरफ्तारी के समय को चिह्नित करने के लिए, बोस ने महात्मा गांधीजी की लाठी के साथ चलते हुए एक काले और सफेद लिनोकट (दांडी मार्च) प्रिंट का निर्माण किया। यह अहिंसा आंदोलन के लिए एक महत्वपूर्ण कृति बन पड़ी है। दांडी मार्च (लिनोकट) भी आपके प्रसिद्ध चित्रों में गिना जाता है।

3 दिसंबर 1882 को बिहार राज्य में जन्में बोस की कृति 'सती' इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरियंटल आर्ट में पुरस्कृत हुई, प्राप्त राशि से आप देश के दौरे पर निकल गये और अपने दृष्टि को समृद्ध बना कर वापस लौटे, कृतियों में दौरे की झलक स्पष्टत- देखी जा सकती है। आगे चलकर इस संस्था से आपका जुड़ाव भी रहा। अवनींद्रनाथ एवं रविंद्रनाथ को आपका कार्य हमेशा से पसंद था फलत- शांति निकेतन के कला भवन में विभागाध्यक्ष का पद प्राप्त हो गया जहाँ से आप अपने प्रतिभा का पूरा उपयोग करते हुए कई शिष्यों को तैयार करते हैं और पूरे हिन्दुस्तान में नव बंगाल जैसे शैली में कार्य करते रहे।

आपकी अधिकांश कृतियां आधुनिक कला दीर्घा नई दिल्ली में सुरक्षित है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लखनऊ और हरिपुरा सत्र में भी आपके कलाकारी को खूब सराहा गया। पद्म विभूषण, कलकत्ता विश्वविद्यालय से डी.लिट जैसे सम्मानों से सम्मानित होने का सौभाग्य भी आपको प्राप्त हुआ। आप पर आधारित वृत्तचित्रों का भी निर्माण हो चुका है। अजंता के भित्ति चित्रों से प्रभावित बोस की रेखाएं गजब की स्वतंत्र हैं, एनॉटामी में भी स्वतंत्रता के दर्शन होते हैं, अधिकतर कृतियों में बॉर्डर की एकरूपता है जिससे बचा जा सकता था।

योकोयामा, विलियम रोथेंस्टीन, ओकाकुरा काकुज़ो, एरिक गिल जैसों के साथ भी काम का मौका रहा। गांधी, नेहरु और बोस जैसे लोगों के भी आप पसंदीदा कलाकार रहे हैं जिसके चलते और भी कई ऐतिहासिक कृतियों से जुड़ने का आपको मौका मिला। रवींद्रनाथ के कविताओं पर भी आपने चित्र बनाये। रूपावली, शिल्पकला जैसे पुस्तकों का लेखन भी आपने किया। 16 अप्रैल 1966 को कलकत्ता में आपका देहावसान हो गया। कलाकृति साभार गूगल से है।

ईस्टर पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक पत्रकार हैं।

नवजीवन का संदेश देता पुनरुत्थान पर्व ईस्टर

क्रिसमस के अतिरिक्त 'ईस्टर' को भी ईसाई धर्म का सबसे बड़ा और प्रमुख पर्व माना जाता है। एक ओर जहां क्रिसमस ईसा मसीह के जन्म की स्मृति में मनाया जाता है, वहीं ईस्टर उनके पुनरुत्थान का पर्व है। यह पर्व प्रतिवर्ष गुड फ्राइडे के तीसरे दिन रविवार को मनाया जाता है, जिसे 'ईस्टर संडे' भी कहा जाता है। इस वर्ष यह 20 अप्रैल को मनाया जा रहा है। गुड फ्राइडे का दिन ईसा मसीह के बलिदान की याद दिलाता है, जब उन्हें सूली पर चढ़ाया गया था। यह दिन ईसाइयों के लिए शोक और गंभीरता का दिन होता है लेकिन उसके ठीक तीसरे दिन रविवार को जब ईसा मसीह के पुनः जीवित होने की मान्यता है, उस दिन लोगों की खुशी का कोई ठिकाना नहीं होता। उसी पुनरुत्थान की स्मृति में ईस्टर मनाया जाता है, जिसे ईसाई धर्म में परम आनंद और नवजीवन का प्रतीक माना गया है। ईसाई धर्म के अनुसार, ईसा मसीह का पुनर्जीवन उनकी दिव्यता और प्रभुता का प्रमाण माना जाता है। ईसा ने अपने जीवन में प्रेम, करुणा, क्षमा और सेवा का जो संदेश दिया था, वह उनके बलिदान और पुनरुत्थान के माध्यम से और अधिक प्रभावशाली बन गया। ईस्टर के दिन ईसाई समुदाय के लोग गिरजाघरों में एकत्र होते हैं, मोमबत्तियां जलाते हैं, बाइबिल का पाठ करते हैं और यीशु को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हैं। इस दिन को 'ईस्टर दिवस' या 'ईस्टर रविवार' के नाम से भी जाना जाता है। बाइबिल में वर्णित घटनाओं के अनुसार, ईसा मसीह के पुनर्जीवित होने के बाद उन्होंने 40 दिनों तक पृथ्वी पर निवास किया और अपने अनुयायियों को सत्य, प्रेम और करुणा का मार्ग दिखाया। फिर वह स्वर्ग की ओर चले गए।

ईस्टर केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है बल्कि यह नवजीवन, उम्मीद और सकारात्मक बदलाव का प्रतीक भी है। माना जाता है कि जब ईसा मसीह पुनः जीवित हुए, तब उन लोगों को भी पश्चाताप हुआ, जिन्होंने उन्हें यातनाएं दी थी और सूली पर चढ़ाया था। ईसाई धर्म की मान्यता है कि 'ईस्टर' शब्द की उत्पत्ति 'ईस्त्र' नामक वसंत और उर्वरता की देवी से हुई है, जिसकी पूजा यूरोप की प्राचीन पौराणिक परंपराओं में की जाती थी। अप्रैल माह में होने वाले उस देवी के उत्सवों के कई तत्व आज भी यूरोप में मनाए जाने वाले ईस्टर उत्सवों में देखे जा सकते हैं। यही कारण है कि इस पर्व को नवजीवन और प्रकृति के पुनरुत्थान के रूप में भी देखा जाता है। कुछ देशों में यह पर्व दो दिन तक मनाया जाता है और दूसरे दिन को 'ईस्टर सोमवार' कहा जाता है। ईस्टर से पहले का रविवार 'खजूर रविवार' या 'पाम संडे' के नाम से जाना जाता है, जो ईसा मसीह के यरुशलम आगमन की स्मृति में मनाया जाता है। कहा जाता है कि 29 ईस्वी में ईसा मसीह गधे पर सवार होकर यरुशलम पहुंचे थे और वहां के लोगों ने खजूर की डालियों से उनका स्वागत किया था। इसी कारण इस दिन को 'पाम संडे' कहा गया। यहीं से उनके खिलाफ षड्यंत्र रचा गया और राजद्रोह के आरोप में उन्हें शुक्रवार को सूली पर चढ़ा दिया गया। यह दिन 'गुड फ्राइडे' के रूप में जाना जाता है, जो ईसाई धर्म में एक अत्यंत पवित्र परंतु शोकपूर्ण दिन होता है। इसके तीसरे दिन जब ईसा मसीह के पुनर्जीवित होने की घटना हुई, तो वह दिन ईस्टर संडे कहलाया। यह घटना ईसाई धर्म में सत्य की विजय और जीवन की पुनः स्थापना का प्रतीक मानी जाती है।

ईस्टर की पूजा और आराधना विशेष रूप से उषा काल में की जाती है क्योंकि मान्यता है कि प्रभु यीशु का पुनरुत्थान भोर के समय हुआ था। यह समय प्रतीकात्मक रूप से अंधकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होने का है। इस अवसर पर ईसाई महिलाएं विशेष आराधना में भाग लेती हैं और अपने विश्वास को प्रकट करती हैं। रात भर जागरण कर प्रभु यीशु के पुनरुत्थान का उत्सव मनाया जाता है। गिरजाघरों में मोमबत्तियों की रौशनी से वातावरण आलोकित हो उठता है। ईस्टर की संध्या और रात्रि को ईसाई समुदाय के लोग विशेष प्रार्थनाएं करते हैं और प्रभु से मार्गदर्शन और आशीर्वाद की कामना करते हैं। ईसा मसीह के पुनर्जीवित होने की घटना ईसाई धर्म में बहुत ही मार्मिक और श्रद्धास्पद मानी जाती है। बाइबिल के अनुसार, जब ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाकर एक कब्र में रखा गया तो उनके अनुयायी गहरे शोक में डूबे हुए थे। गुड फ्राइडे के तीन दिन बाद रविवार को मरियम मदीलिनी नामक महिला कब्र पर गई और देखा कि वहां रखी बड़ी शिला हट चुकी थी। उसने कब्र के भीतर देखा तो ईसा मसीह का शरीर वहां नहीं था, केवल उनका कफन पड़ा था। वह स्तब्ध और व्यथित हो गई। जब वह वहीं बैठकर रो रही थी तो उसे दो स्वर्गदूत दिखाई दिए, एक ईसा के सिर और एक उनके पैरों की जगह खड़ा था। उन्होंने उससे पूछा कि वह क्यों रो रही है। उस महिला ने कहा कि उसके प्रभु को कोई उठा ले गया है। तभी उसने ईसा मसीह को स्वयं सामने खड़ा देखा। ईसा ने कहा कि वह परमपिता के पास जा रहे हैं। यह दृश्य उस महिला के लिए एक अद्भुत अनुभव था, जो उसने तुरंत ईसा के अन्य अनुयायियों को जाकर सुनाया। इस घटना ने अनुयायियों में विश्वास और उत्साह की एक नई ज्योति जगा दी और वे फिर से ईसा मसीह के उपदेशों को फैलाने के लिए प्रेरित हो गए। ईसाई धर्म के अनुसार, पुनरुत्थान के बाद ईसा मसीह ने 40 दिन तक पृथ्वी पर अपने अनुयायियों को मार्गदर्शन दिया। उन्होंने उन्हें प्रेम, करुणा, क्षमा और सेवा का महत्व समझाया। फिर एक दिन वह अपने शिष्यों के साथ आकाश की ओर उठ गए। यह घटना ईसाई धर्म में 'एसेंशन' या स्वर्गारोहण के रूप में जानी जाती है, जिसे पुनरुत्थान की पूर्णता माना जाता है।

ईस्टर केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है बल्कि यह नवजीवन, उम्मीद और सकारात्मक बदलाव का प्रतीक भी है। माना जाता है कि जब ईसा मसीह पुनः जीवित हुए, तब उन लोगों को भी पश्चाताप हुआ, जिन्होंने उन्हें यातनाएं दी थी और सूली पर चढ़ाया था। ईसाई धर्म की मान्यता है कि 'ईस्टर' शब्द की उत्पत्ति 'ईस्त्र' नामक वसंत और उर्वरता की देवी से हुई है, जिसकी पूजा यूरोप की प्राचीन पौराणिक परंपराओं में की जाती थी। अप्रैल माह में होने वाले उस देवी के उत्सवों के कई तत्व आज भी यूरोप में मनाए जाने वाले ईस्टर उत्सवों में देखे जा सकते हैं। यही कारण है कि इस पर्व को नवजीवन और प्रकृति के पुनरुत्थान के रूप में भी देखा जाता है। कुछ देशों में यह पर्व दो दिन तक मनाया जाता है और दूसरे दिन को 'ईस्टर सोमवार' कहा जाता है। ईस्टर से पहले का रविवार 'खजूर रविवार' या 'पाम संडे' के नाम से जाना जाता है, जो ईसा मसीह के यरुशलम आगमन की स्मृति में मनाया जाता है।

ईस्टर के दिन अंडों का विशेष महत्व होता है। अंडे को नवजीवन, उर्वरता और नई शुरुआत का प्रतीक माना गया है। प्राचीन परंपराओं के अनुसार, अंडा जीवन के संभावनाओं से भरपूर होता है, जो सृजन की शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। इसीलिए ईस्टर पर अंडों को रंगकर सजाया जाता है, उन्हें उपहार स्वरूप एक-दूसरे को दिया जाता है और घरों को अंडों से सजाया जाता है। यह परंपरा बच्चों में विशेष रूप से लोकप्रिय होती है और कई स्थानों पर 'ईस्टर एग हंट' नामक खेल भी आयोजित किया जाता है, जिसमें बच्चे छिपाए गए रंगीन अंडों को ढूंढते हैं। ईस्टर केवल धार्मिक और आध्यात्मिक पर्व नहीं है बल्कि यह सामाजिक मेल-जोल, स्नेह और भाईचारे की भावना को प्रकट करने का भी एक माध्यम बन चुका है। इस दिन परिवारजन एक साथ मिलते हैं, विशेष भोज का आयोजन होता है और आनंद व उल्लास का वातावरण बनता है। मोमबत्तियों की रौशनी और रंगीन अंडों की सजावट से घर और चर्च जगमगा उठते हैं। यह पर्व हर व्यक्ति को संदेश देता है कि चाहे जीवन में कितना ही अंधकार क्यों न आ जाए, विश्वास, प्रेम और सत्य की शक्ति से उजाला संभव है। ईस्टर न केवल ईसाई धर्म का एक महत्वपूर्ण पर्व है बल्कि यह मानवीय मूल्यों और जीवन की सुंदरता का उत्सव भी है। यह पर्व हमें यह याद दिलाता है कि दुख और मृत्यु के पार भी आशा, पुनरुत्थान और जीवन की संभावना हमेशा बनी रहती है। ईसा मसीह का जीवन और उनके पुनरुत्थान की यह घटना प्रत्येक व्यक्ति को आंतरिक रूप से सशक्त बनाती है और विश्वास दिलाती है कि सत्य कभी पराजित नहीं होता। यही कारण है कि ईस्टर केवल ईसाइयों का ही नहीं बल्कि समस्त मानवता के लिए एक प्रेरणादायक पर्व है, जो जीवन को सकारात्मक दृष्टि से देखने की प्रेरणा देता है।

एक अच्छी कहानी की बुनावट मगर फार्मूले लम्बे खिंच गये

वेब समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक हैं)

डरावनी फिल्मों का वैश्विक स्तर पर एक अलग और बड़ा बाजार रहा है। हॉलीवुड की हॉरर फिल्में भारत में भी खूब देखी जाती है। उसी के समान्तर रामसे ब्रदर्स और भाखरी ब्रदर्स ने भी बॉलीवुड में डरावनी फिल्मों का बाज़ार बनाया था वरना कोई और निर्माता तो डरावनी फ़िल्मों के नाम से भी डरने लगता था। कभी-कभी भूले भटके विक्रम भट्ट ज़रुर भटकती आत्माओं पर फिल्म बना लेते हैं। लेकिन, हॉरर को एक श्रेणी के तौर पर विकसित करने और इसके लिए समर्पित लोगों की टीम बनाने के लिए निवेश का जोखिम अभी तक गिनती की ही हिन्दी फिल्म निर्माण कम्पनियों ने उठाया है। निर्देशक विशाल फुरिया मुम्बई में हॉरर फिल्मों के होने वाले खास शोज में अक्सर देखें जाते थे शायद वहीं से उन्होंने प्रेरणा ली और बतौर राइटर डायरेक्टर अपनी पहली हॉरर फिल्म - 'छोरी टू' बना डाली।

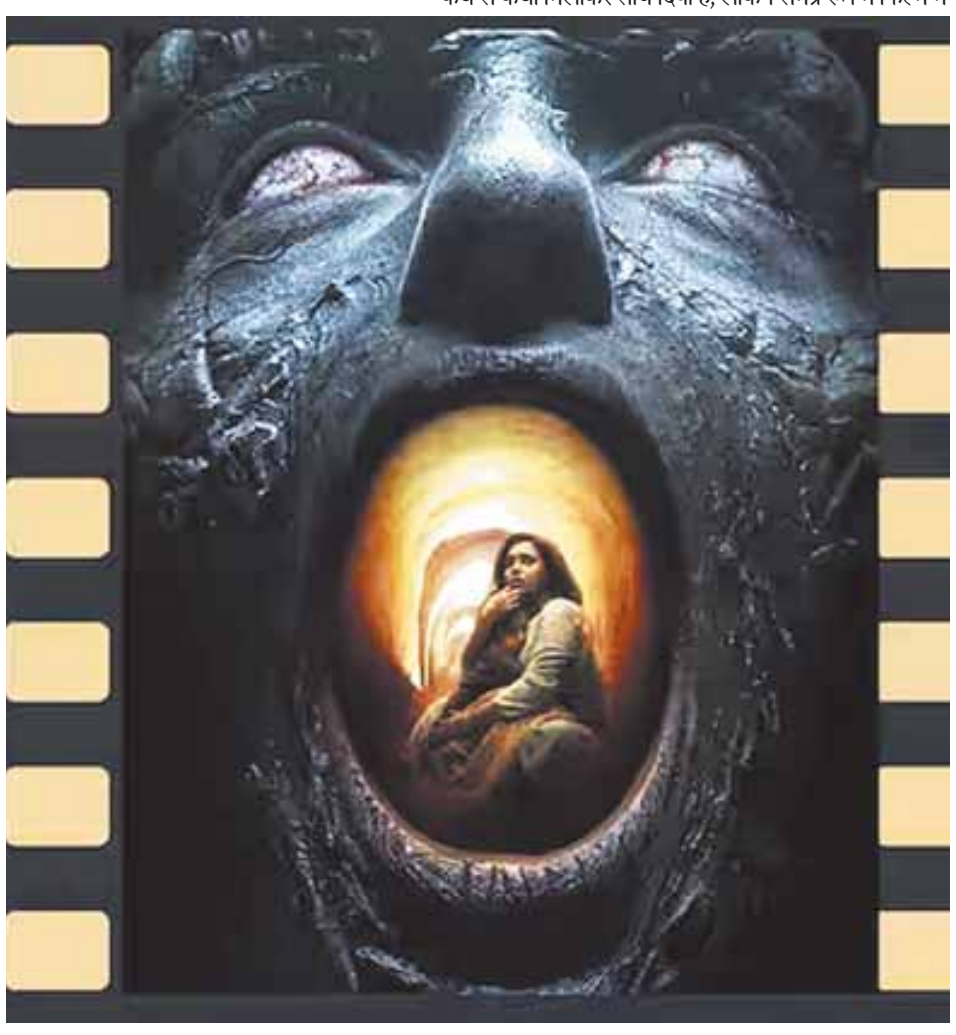

आसान रास्ते को छोड़कर कठिन राह पर चल रहे विशाल फुरिया की भी हिम्मत की दाद देनी चाहिए कि वह हिन्दी सिनेमा के हॉरर के बंधे- बंधाये फॉर्मूले पर नहीं चले। सुरीली आवाज में गाना गाती कोई आत्मा यहाँ नहीं है। प्रेम करते करते भूत प्रेतों तक जा पहुँचे प्रेमी-प्रेमिका भी नहीं है। हाँ, बहुत सारी सुरंगें हैं। जिनका निकास उन कुओं में खुलता है जो गन्ने के खेतों में बने हुए हैं।विशाल फुरिया ने कुछ कुछ प्रेरणा आदित्य सरपोतदार की फिल्म 'मुंज्या' से भी ली है यह भी प्रतीत होता है। विशाल फुरिया ने इस फिल्म के लिए कहानी अच्छी बुनी है लेकिन डर फैलाने के लिए जो फॉर्मूले इसके इर्द गिने बुने गये वे न सिर्फ बहुत लम्बे हो गए हैं, बल्कि हॉरर फिल्मों के शौकीनों के लिए बहुत जाने पहचाने भी बन पड़े हैं।

फिल्म के लेखन की टीम पटकथा को कैसे एक ठीक-ठाक शक्ल दी जाये इस मुद्दे पर बार-बार भटकी है और नतीजतन लेखन के बिखराव को निर्देशन में समेटने का अथक प्रयास भी उतना कारगर नहीं रहा जितना अपेक्षित था। फिल्म में साक्षी के पति के किरदार में सौरभ गोयल की वापसी असरदार है। दिवगंत आत्माओं के साक्षी के साथ मिलकर शैतान का मुकाबला करने वाला क्लाइमेक्स भी अच्छा बन पड़ा है, लेकिन वहाँ तक आने के लिए दर्शकों में जो धैर्य चाहिए, वही इस फिल्म की असली चुनोती साबित हुई।एक अच्छी शुरुआत के बाद फिल्म बीच में आकर बहुत बोझिल होने लगती है। सुरंगों में कभी ईशानी का माँ को ढूंढना, कभी माँ का ईशानी को ढूंढना, फिर राजबीर का साक्षी को ढूंढना और साक्षी के मददगार पुलिसवाले का भी इन सुरंगों में भटकते रहना, कहीं कहीं बहुत दोहराव वाला लगने लगता है।

फिल्म का बैकग्राउंड म्यूजिक भी बहुत असरदार नहीं है। ग्रामीण अँचलों की ऐसी कहानियों में वहाँ के लोकसंगीत को जरूर मौका देना चाहिए। अंशुल चौबे ने अपने निर्देशक का जरूर कैमरा लेकर कंधे से कंधा मिलाकर साथ दिया है, लेकिन समग्र रूप में फिल्म में ऐसी कोई असरदार बात नहीं है, जो यादगार बन जाए। चेहरे के जरिये किसी इंसान की आत्मा खींच लेने वाला हैरी पॉटर सीरीज की फिल्मों जैसा सीन रचने से भी विशाल फुरिया को बचना चाहिए था।

फिल्म के स्टारकास्ट की एक्टिंग की बात करें तो सोहा अली खान ने दमदार वापसी की है। उन्होंने अपने किरदार को जितनी अच्छी तर पकड़ा, उतनी ही अच्छी दासी के रूप में बॉडी लैंग्वेज और भाषा का इस्तेमाल भी किया। नुसरत भरूचा भी अपने चरित्र के साथ न्याय करती दिखीं, लेकिन एक-दो जगह वह चूक गईं। जैसे कुएँ वाल सीन में जब उनके अन्दर आत्मा आती है, तो न तो उनका बॉडी लैंग्वेज से भी ऐसा लगता है और न ही आवाज में डरावनापन दिखता है। गश्मीर महाजनी भी पूरी फिल्म का हिस्सा हैं, उनका चरित्र भी सहज है और उसे उन्होंने अच्छी तरह से निभाया है?।

9 वीं कक्षा के छात्र ने लगाई फांसी, मौत

बैतूल। कक्षा 9 वीं के छात्र ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली है। पुलिस ने सूचना मिलने पर शव पीएम के उपरांत परिजनों को सौंप दिया है। आत्महत्या के कारणों का खुलासा नहीं हो सका है। घटना बैतूलबाजार थाने के ग्राम दीवानचारसी की है। प्राप्त जानकारी के अनुसार अमित पिता प्रेमलाल उईके उम्र 15 वर्ष निवासी ग्राम दीवान चारसी थाना बैतूल बाजार बालक शुक्रवार दोपहर घर में अकेला था। जब बालक के दादा घर पहुंचे तो उन्होंने देखा कि बालक फांसी के फंदे से लटका हुआ है। इसके बाद उन्होंने इसकी जानकारी अपने बाकी परिजनों को दी। परिजन घटनास्थल पर पहुंचे और इसकी सूचना बैतूल बाजार पुलिस को दी गई। सूचना मिलने ही बैतूल बाजार पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और बालक के शव को फांसी के फंदे से नीचे उतरकर पंचनामा करने के बाद शव जिला अस्पताल लाया गया। परिजनों ने बताया कि बालक कक्षा आठवीं का छात्र था जो पास होकर कक्षा 9 वीं में पहुंचा था। बालक घर में अकेला था जब उसके दादा घर पहुंचे तो उन्होंने उसे फांसी के फंदे से लटका हुआ देखा। बालक के पिता प्रेमलाल मजदूरी का काम करते हैं। फिलहाल मृतक बालक के शव का शनिवार जिला अस्पताल में पोस्टमार्टम कर शव परिजनों को सौंप दिया गया है। वहीं बालक ने किन कारणों से फांसी लगाई है, फिलहाल अभी स्पष्ट नहीं हो पाया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

हिमांशु देशमुख ने जेईई मैंस में हासिल किए 99.31 परसेंटाइल

बैतूल। जिले के छोटे से गांव ससुनद्रा के छात्र हिमांशु देशमुख ने जेईई मैंस 2025 परीक्षा में शानदार प्रदर्शन करते हुए 99.31 परसेंटाइल प्राप्त किए है। हिमांशु ने

अपनी स्कूली शिक्षा बैतूल के संजीवनी स्कूल से पूरी की। जेईई की तैयारी उन्होंने फिजिक्सवाला की ऑनलाइन कोचिंग के माध्यम से की। गांव में सीमित संसाधनों और नेटवर्क की दिक्कतों के बावजूद हिमांशु ने कठिन परिश्रम और आत्मविश्वास के बल पर यह उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की। अपनी सफलता के बारे में बताते हुए हिमांशु ने बताया ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान कई बार नेटवर्क की समस्याएं आई, लेकिन मैंने कभी हार नहीं मानी। मेरे माता-पिता और शिक्षकों का लगातार सहयोग और मार्गदर्शन मुझे आगे बढ़ाता रहा। हिमांशु का अगला लक्ष्य जेईई एडवांस्ड में बेहतरीन प्रदर्शन कर आईआईटी में प्रवेश प्राप्त करना है। हिमांशु की इस सफलता पर उनके पिता अनिल देशमुख और माता अर्चना देशमुख सहित शुभचिंतकों ने शुभकामनाएं दी। हिमांशु की यह सफलता जिले के विद्यार्थियों के लिए भी एक प्रेरणास्त्रोत बन गई है।

बैतूल में आज लगेगा नि :शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर, 9 विशेषज्ञ डॉक्टर रहेंगे मौजूद

बैतूल। नागरिकों को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से आज 20 अप्रैल रविवार को निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह शिविर सुबह 11 बजे से लेकर दोपहर 4 बजे तक चलेगा। आयोजन स्थल गोठी कालोनी लेन नंबर 7 चक्कर रोड बैतूल रहेगा। शिविर का आयोजन नवपक्ष मल्टीकेयर सेंटर द्वारा किया जा रहा है, जिसमें शहर के अनुभवी और विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम मौजूद रहेगी। शिविर में जिन डॉक्टरों की सेवाएं उपलब्ध रहेंगी, उनमें डॉ. योगेश पंडाग्रे (एम.बी.बी.एस., एम.डी., जनरल मेडिसिन, विशेष रूप से आम रोगों का उपचार), डॉ. सूर्या पटेल (एम.बी.बी.एस., एम.एस., मेडिसिन विशेषज्ञ, यूके), डॉ. प्रतिमा रघुवंशी (एम.बी.बी.एस., एम.एस., गाइनो मेडिसिनिस्ट स्त्रीरोग विशेषज्ञ), डॉ. गजानंद लोखण्डे (बी.पी.टी., ऑर्थो फिजियोथेरेपिस्ट), डॉ. नीलम यादव (बी.ए.एम.एस., स्वास्थ्य एवं पंचकर्म विशेषज्ञ), डॉ. अजयर परिहार (बी.ए.एम.एस., जनरल फिजिशियन), डॉ. मिथुनेश जे. सायरिकम्मल (बी.डी.एस., दंत रोग विशेषज्ञ), डॉ. जगनलाल छरेकी (बी.ए.एम.एस., जनरल फिजिशियन) शामिल हैं।

मिलावट से मुक्ति अभियान के तहत नेहरू पार्क चौपाटी का औचक निरीक्षण

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशानुसार जिले में मिलावट से मुक्ति अभियान चलाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत खाद्य सुरक्षा एवं गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए निरंतर निरीक्षण किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में शनिवार को खाद्य विभाग की टीम द्वारा नेहरू पार्क स्थित चौपाटी का औचक निरीक्षण किया गया। खाद्य सुरक्षा अधिकारी संदीप पाटिल ने बताया कि निरीक्षण के दौरान चौपाटी पर विभिन्न खाद्य सामग्री जैसे आइसक्रीम, लस्सी, पनीर, चीज, पानीपुरी का पानी आदि के नमूने एकत्र किए गए हैं।

जिले में 88 प्रतिशत ई-केवाईसी का काम पूरा, फिंगर प्रिंट में दिक्कत आने पर फेस से की जा रही ई-केवाईसी

10 दिन बाकी- 1 लाख 44 हजार लोगों की ई-केवाईसी होना शेष

बैतूल। हर माह मिलने वाले राशन के लिए परिवार के सभी सदस्यों की ई-केवाईसी अनिवार्य हो गई है। इसके लिए 30 अप्रैल तक सभी को ई-केवाईसी कराना अनिवार्य है। अब इस प्रक्रिया के लिए मात्र 10 दिन शेष है। जिले के 1 लाख 44 हजार लोगों की ई-केवाईसी करना शेष है, ऐसे में यह चुके, तो राशन से वंचित हो जाएंगे। हालांकि शासन, प्रशासन स्तर से इन पात्र लोगों के लिए मोबाइल एप के साथ स्थानीय स्तर पर भी ई-केवाईसी की प्रक्रिया शुरू कर दी है, ताकि लोगों को समय पर राशन मिल सके। दरअसल, राशन वितरण में पारदर्शिता लाने व फर्जी लोगों पर रोक लगाने के लिए पिछले करीब तीन माह से ई-केवाईसी की प्रक्रिया की जा रही है। शेष रहे गए, लोगों की ई-केवाईसी कराने के लिए कलेक्टर ने सभी अफसरों को जिम्मेदारी सौंपी है, ताकि जल्द से जल्द काम पूरा हो सके। वर्तमान में करीब 12 लाख 76 हजार 346 उपभोक्ताओं को राशन का वितरण किया जाता है। इसमें से करीब 11 लाख 32 हजार उपभोक्ताओं की ई-केवाईसी प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। 10 दिन में 1 लाख 44 हजार उपभोक्ताओं की ई-केवाईसी करना शेष है।

अब एप से भी हो रही ई-केवाईसी - जिले में कई स्थानों पर राशन की दुकान की दूरी अधिक होने से हितग्राही ई-केवाईसी करने के लिए राशन दुकान नहीं जा पा रहे हैं। इसके लिए अब शासन स्तर से नई सुविधा शुरू की है। जिसमें मेरा ई केवाईसी एप के माध्यम से मोबाइल से

उपभोक्ता स्वयं ही प्रक्रिया कर सकता है। दुकान जाने की भी जरूरत नहीं होगी। एक ही मोबाइल नंबर से पूरे परिवार की ई केवाईसी हो जाएगी। जिसमें बच्चे व वृद्धों के लिए भी यह सुविधा दी गई है।

पलायन करने वालों को दे रहे सूचना- जिले से बड़ी संख्या में मजदूरी के लिए लोग महाराष्ट्र के लिए पलायन कर गए हैं। ऐसे में उनकी ई केवाईसी नहीं हो पाई। साथ ही मोबाइल एप में भी लोकेशन डालना जरुरी है। ऐसे में उनकी ई केवाईसी करना शासन के लिए चुनौती बना हुआ है। पहाड़ी क्षेत्र में बसे लोगों को सूचना भी समय पर नहीं मिलने से अधिक समस्या आ रही है। हालांकि पलायन करने वालों को संबंधित राशन दुकान से फोन कर सूचना दी जा रही है।

बच्चों व वृद्धजनों के फिंगर प्रिंट की भी समस्या -ई केवाईसी के लिए कई बच्चों व वृद्धजनों के फिंगर प्रिंट नहीं आने से उनकी ई केवाईसी की समस्या आ रही है। जिससे उन्हें बार-बार दुकान लाना ले जाना भी मुश्किल है, लेकिन अब जो मोबाइल एप दिया गया है उसमें उनकी ऑनलाइन फोटो अपलोड की जाएगी। जिसके बाद उनकी आसानी से ई केवाईसी हो जाएगी। इसके लिए उनके फिंगर प्रिंट की जरूरत नहीं होगी।

जिनकी ई-केवाईसी नहीं, उन्हें नहीं मिलेगा राशन

1 मई से स्मार्ट पीडीएस सिस्टम लागू होने जा रहा है। जिन हितग्राहियों की ई-केवायसी नहीं होगी उन्हें राशन मिलना बंद हो जाएगा। हालांकि विभाग ई-केवाईसी के लिए एप की मदद भी ले रहा है। जिन बुजुर्गों और बच्चों के अंगूठों के निशान नहीं आ रहे हैं, अब उनके न चेहरों को स्कैन कर ई-केवाईसी की जा रही है। इस एप को लोग डाउनलोड कर सकते हैं। सभी पात्र हितग्राहियों की ई-केवायसी 30 अप्रैल तक कराई जाना जरूरी है। जिला खाद्य एवं आपूर्ति अधिकारी केके टेकाम ने बताया कि ई-केवाईसी कराने के लिए उचित मूल्य दुकानों पर सुविधा उपलब्ध है। जो लोग बाहर हैं, वे वहां पास की दुकानों पर जाकर ई-केवाईसी करा सकते हैं। लोगों से कहा जा रहा है कि समय रहते ई-केवाईसी कराएं, ताकि उन्हें मिलने वाला राशन समय से मिलता रहे। ई-केवाईसी एप से बुजुर्गों और बच्चों की ई-केवाईसी भी की जा रही है।

इनका कहना है -

जिले में अब तक 88 प्रतिशत के करीब ई-केवाईसी हो चुकी है यानि करीब 11 लाख 32 हजार उपभोक्ताओं की ई-केवाईसी कर दी है। शेष लोगों की ई-केवाईसी का काम भी तेजी से चल रहा है। जिन लोगों के फिंगर प्रिंट में दिक्कत आ रही है, उनकी ई-केवाईसी फेस एप से की जा रही है।

- कृष्ण कुमार टेकाम,
जिला खाद्य एवं आपूर्ति विभाग, बैतूल

सरकार को बर्खास्त कर बंगाल में लागू किया जाए राष्ट्रपति शासन: विश्व हिंदू परिषद

पश्चिम बंगाल की ममता सरकार को बर्खास्त कर राष्ट्रपति शासन तत्काल प्रभाव से लागू किया जाए

बैतूल। पश्चिम बंगाल में नए वक्फ बोर्ड कानून-2025 लागू होने के बाद उत्पन्न हुई अराजक स्थिति और हिंदू समुदाय पर बढ़ती हिंसा के विरोध में विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल ने शनिवार को जिला मुख्यालय पर जोरदार प्रदर्शन किया। संगठन ने शिवाजी चौक से एक रैली निकाली। रैली में बड़ी संख्या में विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के कार्यकर्ता शामिल हुए, जो जय श्रीराम, ममता सरकार मुर्दाबाद जैसे नारे लगाते हुए कलेक्ट्रेट कार्यालय पहुंचे। यहां विहिप पदाधिकारियों ने राष्ट्रपति के नाम अपर कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा और पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी सरकार को बर्खास्त कर तत्काल प्रभाव से राष्ट्रपति शासन लागू करने की मांग की। रैली का नेतृत्व कर रहे विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के प्रांत संगठन मंत्री सुरेंद्र सिंह ने कहा कि बंगाल में जो घटनाएं घट रही हैं, वे सुनियोजित षड्यंत्र का हिस्सा हैं। हिंदू समाज को डराने, आतंकित

करने और उन्हें उनके ही राज्य में विस्थापित करने की कोशिश की जा रही है। ऐसी स्थिति में केंद्र सरकार को हस्तक्षेप करते हुए ममता सरकार को बर्खास्त करना चाहिए ताकि वहां की कानून व्यवस्था बहाल की जा सके। उन्होंने बताया कि वक्फ अधिनियम के बहाने से पश्चिम बंगाल में पिछले एक सप्ताह से हिंदू समुदाय को निशाना बनाकर दंगे और हिंसा फैलाई जा रही है। हजारों की संख्या में हिंदू परिवार पलायन को मजबूर हुए हैं। राज्य सरकार की तरफ से उनकी सुरक्षा के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। यह सब मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति का परिणाम है। ज्ञापन में कहा गया है कि ममता सरकार की भूमिका पक्षपातपूर्ण और हिंदू विरोधी है, जो न सिर्फ संवैधानिक मूल्यों के खिलाफ है बल्कि देश की एकता व अखंडता के लिए भी खतरा है। विहिप ने राष्ट्रपति शासन लागू करने की मांग की। इस अवसर पर विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के प्रांत को रक्षा प्रमुख कृष्णकांत गावंडे, विभाग सह मंत्री राजेश प्रजापति, नीतू काकोड़ीया, सत्यम पांडे, सानू राठौर, सन्नी फुलकर, नवीन राठौर उपस्थित रहे।

जिले के 51 संस्थानों में लगाए आयुष पोषण शिविर

महिलाओं को दी आयुर्वेद की जानकारी, डॉ लक्ष्मी किसनानी के मार्गदर्शन में चला पोषण जागरूकता शिविर

बैतूल। पोषण पखवाड़ा के अवसर पर शनिवार 19 अप्रैल को जिले में आयुष विभाग और महिला बाल विकास विभाग के संयुक्त तत्वावधान में व्यापक स्तर पर जागरूकता अभियान चलाया गया। इस अभियान के अंतर्गत जिले की विभिन्न आंगनबाड़ी केंद्रों में आयुष पोषण शिविरों का आयोजन किया गया, जिसमें पोषण और आयुर्वेद के बीच के गहरे संबंध पर प्रकाश डाला गया।

इस अभियान का उद्देश्य आमजन, विशेषकर महिलाओं और बच्चों को पोषण के महत्व और आयुर्वेदिक पद्धति से स्वास्थ्य सुधार के बारे में जानकारी देना था। जिला आयुष अधिकारी डॉक्टर योगेश चौकीकर ने बताया कि आयुष विभाग के जिला नोडल अधिकारी डॉ लक्ष्मी किसनानी के निर्देशन में यह शिविर जिले भर के 51 आयुष संस्थानों में आयोजित किए गए। इनमें प्रत्येक ब्लॉक में नियुक्त आयुष विभाग के ब्लॉक नोडल अधिकारियों की सक्रिय भूमिका रही।

शिविरों में गर्भवती महिलाओं, धात्री माताओं और छोटे बच्चों की माताओं को पोषण युक्त जीवनशैली और दैनिक दिनचर्या में आयुर्वेद के उपायों को शामिल करने के लिए प्रेरित किया गया। आयुर्वेदिक औषधियों की उपयोगिता, संतुलित आहार,

मौसम के अनुसार खानपान और जीवनशैली में बदलाव के तरीकों पर विस्तार से जानकारी दी गई।

कार्यक्रम में शामिल आयुष चिकित्सकों ने त्रिदोष सिद्धांत, आहार विहार की व्यवस्था, एवं ऋतुचर्या और दिनचर्या के लाभों को भी स्पष्ट किया। इसके साथ ही पोषण से संबंधित समस्याओं के समाधान के लिए औषधीय पौधों का कैसे उपयोग करें, इसकी भी जानकारी दी गई। शिविरों में आयुर्वेदिक परामर्श और औषधि वितरण की व्यवस्था भी की गई।

डॉ लक्ष्मी किसनानी ने बताया कि आयुष विभाग लगातार समाज के अंतिम व्यक्ति तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध है। पोषण पखवाड़ा का उद्देश्य जन-जागरूकता को वास्तविक रूप देना है। आयुर्वेद हमारे जीवन का हिस्सा है और सही पोषण के साथ इसका संयोजन हमें स्वस्थ जीवन की ओर ले जाता है।

इस अभियान में आयुष चिकित्सा अधिकारियों के साथ आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, सहायिकाएं, आशा कार्यकर्ता और पंचायत प्रतिनिधियों ने भी सक्रिय सहयोग दिया। इस प्रकार जिलेभर में आयुर्वेद और पोषण का संदेश जन-जन तक पहुंचाया गया और लोगों ने भी इसे गंभीरता से आत्मसात किया।

बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का पुतला जलाया

पुतले को नाम दिया था 'ममता बानो'

सुबह सवेरे सोहागपुर

विश्व हिन्दू परिषद एवं बजरंग दल के संयुक्त तत्वावधान में बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का पुतला दहन किया। वकील शिवकुमार पटैल ने बताया कि ममता बनर्जी के पुतले 'ममता बानो' नाम दिया गया है। पश्चिम बंगाल में हिंदुओं पर निरंतर अत्याचार किए जा रहे हैं। वहां खोफ माहोल है।भारत सोची समझी रणनीति के तहत हिन्दू समाज पर आघात किए जा रहे हैं। वहां कानून व्यवस्था चरमरा गई है। इस कारण हम राष्ट्रपति से मांग करते हैं।कि वहां तूण मूल की ममता बनर्जी बानो की सरकार को तुरंत बर्खास्त करके राष्ट्रपति शासन लागू करके कानून व्यवस्था को ठीक-ठीक किया जाए।

पुतला दहन के समय मुख्यमंत्री ममता बनर्जी बानो के खिलाफ जमकर नारेबाजी की गई। जिसमें बंगाल सरकार को बर्खास्त करो, पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति शासन लागू करो हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार बंद करो, हिंदू जागो ,हिंदू जागो के नारे लगाए । पुतले को लाने के समय भी जमकर नारेबाजी करते हुए कार्यकर्ता श्री राम चौराहे पर पहुंच कर पुतले को दहन किया गया।इस अवसर पर अधिवक्ता शिव कुमार पटेल ,प्रांत सुरक्षा प्रमुख बजरंग दल श्रीकांत पटेल ,आशीष पुरोहित जिला सुरक्षा प्रमुख, रूपेश रघुवंशी, संजू रघुवंशी ,आशीष मालवी, कृष्ण सारंग ,देव पटेल ,रजित पटेल, किशोर पटेल आदि कार्यकर्ता उपस्थित थे।

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत जिले में संचालित की जा रही अनेक गतिविधियां

जल संरक्षण के लिए जल संगोष्ठी आयोजित, जल संरक्षण की दिलाई शपथ

बैतूल। राज्य शासन के निर्देशानुसार प्रदेश के साथ ही बैतूल जिले में 30 मार्च से 30 जून तक जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत जिले भर में जल संरक्षण से संबंधित अनेक गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं।अभियान के तहत आमजन को जल संरक्षण के प्रति जागरूक करने के लिए दीवार लेखन, जागरूकता रैली, पोस्टर बैनर, ग्राम सभाएं, कलश यात्राएं सहित अनेकों गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। अभियान के तहत जिले के अनेक ग्रामों में कूप मरम्मत, तालाब जीर्णोद्धार, डैम की साफ-सफाई सहित अनेक कार्य किए जा रहे हैं तथा नागरिकों को जल संरक्षण की शपथ भी दिलाई जा रही है। उल्लेखनीय है कि कलेक्टर बैतूल नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशन में जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जिले में जल संरक्षण एवं संवर्धन से संबंधित खेत, तालाब, अमृत सरोवर, परकोलेशन टैंक, डगवेल, तालाब जीर्णोद्धार, जनभागीदारी के कार्य, कूप एवं बाउंड्री मरम्मत के कार्य किए जा रहे हैं। जल गंगा संवर्धन अभियान का प्रमुख उद्देश्य जनभागीदारी से जल संरक्षण तथा संवर्धन सुनिश्चित करना है। इस अभियान के अन्तर्गत समाज की भागीदारी तथा और विभिन्न सहयोगी विभागो की समेकित पहल से मुख्यत जल संरक्षण संरचनाओं के निर्माण, भूजल संवर्धन, पूर्व से मौजूद जल संग्रहण संरचनाओं की साफ सफाई एवं जीर्णोद्धार करना है। इसके साथ ही जल स्त्रोत में प्रदूषण कम करना, साफ सफाई करना, पौधरोपण के कार्य किए जा रहे हैं। इसके साथ ही जल संरक्षण एवं जागरूकता के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

जल गंगा संवर्धन अभियान के अन्तर्गत मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद द्वारा विकासखंड मुलताई के अंतर्गत ग्राम आमाबघोली में तालाब के घाट एवं बघोली में ग्राम की नदी पर गाद निकालने के लिए ग्रामीणों ने उत्साह पूर्वक श्रमदान किया। इस दौरान विकास खंड समन्वयक श्रीमती जयप्रकाशी परते द्वारा जल स्त्रोतों के संरक्षण के लिए ग्राम वासियों से चर्चा की। साथ ही जिला समन्वयक मध्यप्रदेश जनअभियान परिषद बैतूल श्रीमती प्रिया चौधरी ने जल संरक्षण को लेकर जनजागरूकता के तहत चौपाल आयोजित कर छोटे-छोटे जल स्त्रोतों का चिन्हांकन कर उनका संरक्षण करने ग्रामीणों को प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि नदी, तालाब में पूजन सामग्रियों को पॉलिथीन में भरकर विसर्जित न करें। कोई यदि तालाब नदी में गंदगी करता है तो उसे समझाइश दे। इस दौरान घरों से निकलने वाले पानी को सडक़ पर बहने से किस प्रकार रोका जा सकता है पर विस्तृत चर्चा की गई। इस अवसर पर ग्राम सरपंच गोस्वामी, ग्राम सरपंच बाघोली प्रदीप गावंडे, परामर्शदाता बाबूराव ठाकरे, ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति के सदस्य, स्वसहायता समूह की दीदी और ग्रामीण जन उपस्थित रहे।

64 कलाओं पर आधारित शिविर में कहानी कहने की विधा पर मंथन, कन्या विद्यालय में हुआ विशेष सत्र

बैतूल। ई.एफ.ए. शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूलगंज, बैतूल में 64 कलाओं पर आधारित कौशल शिविर के अंतर्गत 19 अप्रैल 2025 को शिक्षा में कहानियां सुनाने का महत्व विषय पर एक प्रभावशाली सत्र आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में विशेषज्ञ शिक्षक वासुदेव काले उपस्थित रहे। वासुदेव काले ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि कहानी सुनाना बच्चों का मनोरंजन करता है, उनकी कल्पनाशक्ति और दोहराने की क्षमता को भी विकसित करता है। उन्होंने बताया कि कहानी सुनाना-सिखाना दुनिया की सबसे पुरानी और प्रभावशाली शिक्षण विधि है। उन्होंने कहा कि विश्व की तमाम संस्कृतियों ने अपने विश्वास, परंपराएं और ऐतिहासिक अनुभव कहानियों के माध्यम से अगली पीढ़ी तक पहुंचाए हैं।

काले ने कहा कि कहानियां बच्चों की कल्पनाशीलता को बढ़ाती हैं और कहानी कहने व सुनने वाले के बीच एक गहरा संवाद स्थापित करती

हैं। शिक्षा में कहानियों का समावेश विद्यार्थियों को रचनात्मक और भावनात्मक रूप से जोडऩे का सशक्त माध्यम बन सकता है। उन्होंने घटना प्रधान, चरित्र प्रधान, वातावरण प्रधान, भाव प्रधान और मनोविश्लेषणात्मक कहानियों के उदाहरण देकर छात्राओं को कहानी कहने की विभिन्न विधाओं से परिचित कराया। इस अवसर पर विशेषज्ञ शिक्षिका टिना साहू ने कहानियों की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कहानियों से छात्र-छात्राओं की संलग्नता बढ़ती है, उनकी रचनात्मक सोच, भाषा कौशल, संचार क्षमता, आलोचनात्मक दृष्टिकोण और नैतिक मूल्यों का भी विकास होता है। विद्यालय के प्राचार्य ललित लाल लिल्होरे ने कहा कि शिक्षा में कहानियों को शामिल करना एक प्रभावशाली और बहुमुखी दृष्टिकोण है। इससे विद्यार्थी किसी भी विषय को अधिक रोचक और यादगार तरीके से समझ सकते हैं। उन्होंने कहा कि कहानी सुनाना शिक्षण प्रक्रिया को बेहतर बनाता है, विद्यार्थियों को कई प्रकार के जीवनोपयोगी कौशल भी सिखाता है।।शिविर के प्रभारी शिक्षक महेश गुंजेले ने बताया कि यह प्रशिक्षण शिविर 64 कलाओं पर आधारित है और 30 अप्रैल 2025 तक चलेगा।

सीआईडी में फिर एसीपी प्रद्युमन की वापसी !

एसीपी प्रद्युमन के किरदार के अंत के बाद सोनी टीवी के शो सीआईडी के दूसरे सीजन में एसीपी आयुष्मान नाम के एक नए कैरेक्टर की एंट्री हुई। लेकिन, अब प्रद्युमन का रोल करने वाले एक्टर शिवाजी साटम ने एक ऐसा पोस्ट किया, जिसके बाद माना जा रहा है कि उनके किरदार की वापसी हो सकती है।

इन दिनों क्राइम टीवी शो सीआईडी का प्लॉट ऐसे ट्रैक पर चल रहा है, जैसा दर्शकों ने कभी सोचा भी नहीं होगा। शो में एसीपी प्रद्युमन के किरदार की मौत हो गई। ये कैरेक्टर एक्टर शिवाजी साटम प्ले करते थे। शो के दर्शकों को एसीपी प्रद्युमन की कमी काफी खल रही है। हालांकि, अब लगता है कि आने सीआईडी वाले समय में शो में उनकी वापसी हो सकती है। एसीपी प्रद्युमन की मौत के बाद शो में एक्टर पार्थ समथान की एंट्री हुई, जो एसीपी आयुष्मान का किरदार निभा रहे हैं। वो भी अपने किरदार को बखूबी निभा रहे हैं। लेकिन, दर्शक एसीपी प्रद्युमन को ही देखना चाहते हैं।

कुछ समय पहले खबर सामने आई थी, कि पब्लिक की भारी डिमांड को देखते हुए मेकर्स किसी तरह एसीपी प्रद्युमन को शो में वापस ला सकते हैं। अब एसीपी प्रद्युमन ने एक पोस्ट किया है, जिसको लेकर फैंस का कहना है कि ये उन्होंने अपनी वापसी को लेकर हिंट दिया है। एक्टर शिवाजी साटम ने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट शेयर करते हुए लिखा कुछ तो गड़बड़ है? ये उनका एक फेमस डायलॉग है, जो वो सालों से इस शो में बोलते आ रहे हैं। ये लाइन महज एक डायलॉग नहीं, बल्कि एक इमोशन है। उनके इस पोस्ट से लोग उनकी वापसी के कयास लगा रहे हैं।

अब शो में कब तक उनकी वापसी होगी, इसे लेकर अभी कोई भी जानकारी नहीं है। वो अभी ब्रेक पर हैं। पार्थ समथान ने शो में एसीपी आयुष्मान के किरदार में ग्रैंड एंट्री की है। दया और अभिजीत के साथ उनका क्लैश देखने को मिल रहा है। कुछ समय पहले ऐसी बातें सामने आई थीं कि पार्थ इस शो में हमेशा के लिए नहीं आए, बल्कि उनको कुछ एपिसोड के लिए ही साइन किया गया है। माना जा रहा है कि एसीपी प्रद्युमन की वापसी के बाद एसीपी आयुष्मान वापस जा सकते हैं।

आयुष्मान की एंट्री के बाद से ही उनकी सीआईडी की पुरानी टीम के साथ टशन दिख रहा है। एसीपी प्रद्युमन के बेहद खास रहे अभिजीत और दया उनकी मौत के सदमे से उबर नहीं पा रहे। लेकिन एसीपी आयुष्मान उन्हें अपने इमोशन पर काबू रख काम पर ध्यान देने की नसीहत देता है, जिसके बाद उसकी टीम से अनबन हो जाती है। सोनी टीवी से जारी एक वीडियो में, आयुष्मान अपने तीखे बयान से अपनी उपस्थिति दर्ज कराते नजर आते हैं।

सीआईडी 2 के प्रोमो में एसीपी आयुष्मान के रोल में दिख रहे एक्टर पार्थ समथान अभिजीत और दया से कहते हैं कब तक एसीपी प्रद्युमन की मौत पर आंसू बहाओगे! अपने दर्द, इमोशन और आंसू की पोटली बनाकर इसे ऑफिस के बाहर लटका कर आया करो! सीन में देखा गया कि अभिजीत और दया गुस्से से आयुष्मान को घूरते नजर आते हैं। इसके साथ शो के दौरान भी दया और अभिजीत की आयुष्मान के साथ बहस होती है। आयुष्मान अपने तीखे बयान से अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं।

दया कहते हैं 'मुझे केवल परिणाम प्रभावित करते हैं। दया तुरंत उन्हें आश्वस्त करते हैं। चिंता मत कीजिए एसीपी साहब, कुछ ही दिनों में आपको परिणाम मिल जाएगा। एक मरा हुआ बारबोसा। यह ठंडा जवाब आयुष्मान को पसंद नहीं आता, वो पलटकर कहते हैं 'आप लोग सीआईडी अधिकारी हैं, गैंगस्टर नहीं, आप बस बारबोसा को पकड़ें. कानून और व्यवस्था बाकी का ख्याल रखेगी!' तनाव तब और बढ़ जाता है, जब अभिजीत गुस्से से कहते हैं 'हम बारबोसा की सजा तय करेंगे!' इन दिनों शो की कहानी बारबोसा की तलाश के इर्द-गिर्द घूम रही है, जो प्रद्युम्न की हत्या के लिए जिम्मेदार है। लेकिन, अब यह सिर्फ एक मिशन नहीं है, यह व्यक्तिगत हो गया।

दादा मनोहर भाई के किले को ढहाने निकले

एक्शन स्टार अजय देवगन की मच-अवेटेड फिल्म रेड 2 का टीजर काफी पसंद किया गया था। 8 अप्रैल को फिल्म का ट्रेलर रिलीज कर दिया। फिल्म रेड 2 का धांसू ट्रेलर लोगों को काफी पसंद आ रहा है। फिल्म में निगेटिव रोल में नजर आने वाले रितेश देशमुख और अजय देवगन की भिड़ंत लोगों को आकर्षित कर रही है।

फिल्म का ट्रेलर देखने के बाद से दोनों स्टार्स के तमाम चाहने वाले इसके सिनेमाघरों में रिलीज होने का ब्रेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। फिल्म रेड 2 साल 2018 में रिलीज हुई अजय देवगन की फिल्म रेड का सीक्वल है। फिल्म रेड को काफी अच्छा रिस्पॉन्स मिला था। अब देखने वाली बात होगी कि फिल्म रेड 2 बॉक्स ऑफिस पर क्या कमाल करती है।

फिल्म रेड 2 में अजय देवगन एक बार फिर आईआरएस अधिकारी अमय पटनायक के रोल में नजर आएंगे। वहीं, रितेश देशमुख राजनेता दादा मनोहर भाई का किरदार निभाते आएंगे। फिल्म के ट्रेलर में साफ पता चल रहा है कि अजय देवगन इस बार रितेश देशमुख के घर पर रेड मारने के लिए पहुंचते हैं। इसके बाद से दोनों के बीच क्लैश शुरू होता है। अजय देवगन और रितेश देशमुख की फिल्म रेड 2 में जबरदस्त सस्पेंस भी देखने को मिलने वाला है। फिल्म के ट्रेलर को अच्छा रिस्पॉन्स मिल रहा है। फिल्म रेड 2 1 मई को सिनेमाघरों में दस्तक देने वाली है।

राजकुमार गुप्ता के डायरेक्शन में बनने वाली फिल्म रेड 2 में अजय देवगन और रितेश देशमुख के अलावा वाणी कपूर, सौरभ शुक्ला, रजत कपूर, सुप्रिया पाठक जैसे कलाकार महत्वपूर्ण भूमिका में नजर आएंगे। अजय देवगन की फिल्म रेड ने वर्ल्ड वाइड 150 करोड़ रुपये की कमाई हुई थी। अब देखने वाली बात यह होगी कि अजय देवगन की फिल्म रेड 2 को बॉक्स ऑफिस पर कैसा रिस्पॉन्स मिलता है।

रियल बॉक्स

हिंदी फिल्मों में यहूदियों के योगदान का दौर

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

हिंदी फ़िल्में कहने को हिंदी भाषा की फ़िल्में होती हैं, पर इसमें समाज के हर वर्ग की भाषा और बोली का योगदान होता है। इन लोगों की मूल भाषा कुछ भी हो, पर फिल्म में वे हिंदी ही बोलते दिखाई देते हैं। देश के करीब सभी समाज के लोगों ने हिंदी फिल्मों के उत्थान में हाथ बंटाया, पर बात इतनी ही नहीं है। देश के बाहर के कई समाजों ने भी हिंदी की फिल्मों में अपनी हिस्सेदारी निभाई है। यहां तक कि यहूदियों ने भी फिल्मों में कई तरीकों से अपना योगदान दिया। इतिहास को पलटा जाए, तो हमारे देश में यहूदी 1930 और 1940 के दशक में हिंदी फिल्मों में सक्रिय थे। ये वो दौर था जब दुनिया के कई देशों में यहूदियों के खिलाफ विरोध चल रहा था। पर, भारत में ऐसा कुछ नहीं था। हमारे देश में भौगोलिक के साथ सांस्कृतिक और भाषाई विविधता की कमी नहीं है। ऐसे में यहां यहूदियों को सामंजस्य बनाने में कोई समस्या नहीं आई। तब भारत में भी ऐसा माहौल नहीं था और लंबे अरसे तक यहूदियों को हिंदी फिल्मों में काम मिलता रहा।

सुज़ैन सोलोमन अपने स्टेज नाम फिरोजा बेगम, सुलोचना (नी रूबी मेयर्स), पहली मिस इंडिया, प्रमिला (नी एस्थर अब्राहम) यहां तक कि नादिरा (फ्लोरेंस ईजेकील) के नाम से प्रसिद्ध हुई। लेकिन, हिंदी फिल्मों के उत्थान में यहूदियों का योगदान अभिनेत्रियों तक ही सीमित नहीं था। पहली भारतीय बोलती फिल्म आलम आरा (1931) की पटकथा और गाने एक यहूदी, जोसेफ पेनकर डेविड ने लिखे थे। फिल्मों के महान कोरियोग्राफरों में से एक डेविड हरमन भी यहूदी थे। सिनेमा के पुरुष कलाकारों में डेविड अब्राहम चेउलकर थे, जिन्होंने 100 से अधिक फिल्मों में अभिनेता रहे। मशहूर नाटककार आगा हश्र कश्मीरी ने ही रोमिला का सिनेमा से परिचय कराया। रिमझिम, दो बातें, साइकिल वाली और चाबुक वाली उनकी चर्चित फिल्में रहीं।

रोमिला और प्रमिला की चचेरी बहन रोज मुसलीह ने भी मूक सिनेमा के दौर में एक चर्चित नर्तकी के रूप में नाम कमाया। रोज ने कसौटी जैसी चर्चित फिल्म में काम किया। उनकी शोहरत ऐसी अभिनेत्री के रूप में बनी, जिनके नृत्य पर सिनेमा के शौकीन फिदा रहे। 1948 में आई फिल्म हम भी इंसान हैं में देव आनंद के साथ काम करने वाली रमाला देवी भी यहूदी मूल की अभिनेत्री थी। उनका असली नाम था रैशेल कोहेन था। खजांची फिल्म में उन पर फिल्माया साइकिल वाला गाना अपने समय का चर्चित गीत रहा। रमाला देवी ने हिंदी सिनेमा में फैशन को खूब बढ़ावा दिया। लक्स साबुन की शुरुआती ब्रांड अंबेसडर में उनका नाम भी शामिल था।

यहूदी मूल की चर्चित अभिनेत्रियों में सबसे ज्यादा लोकप्रिय हुई नादिरा। उनका असल नाम फ्लोरेंस एजेकील था। एक बगदादी यहूदी परिवार में जन्मी नादिरा का हिंदी सिनेमा से परिचय महबूब की पत्नी सरदार बेगम ने कराया था। वे दिलीप कुमार के साथ आन में अपने बोल्ड किरदार से चर्चा में आईं। लेकिन, उन्हें शोहरत मिली फिल्म 'श्री 420' के माया के किरदार से। राज कपूर की फिल्मों की शौकीन नादिया उस जमाने में हिंदी सिनेमा की असल वैम्प थीं, जिन्होंने राजकपूर की कई फिल्मों में खलनायिका की भूमिका निभाई। 1952 में आयी फिल्म आन ने उन्हें पहचान दी। उसके बाद श्री 420, दिल अपना और प्रीत पराई, छोटी-छोटी बातें, पाकीजा, अनोखा दान आदि 66 फिल्मों में यादगार रोल निभाए व तीन टीवी सीरियल में भी काम किया। दिल अपना और प्रीत पराई, हंसते जख्म, अमर अकबर एंथनी और पाकीजा जैसी फिल्मों में भी नादिरा का किरदार चर्चा में रहा। जूली में उनके किरदार की खूब चर्चा हुई और उनकी आखिरी फिल्म रही 2000 जोश।

हिंदी फिल्मों के चर्चित कलाकार डेविड भी इस्त्राइली मूल के यहूदी अभिनेता थे। उनका पूरा नाम डेविड अब्राहम चेउलकर था। 1937 में जम्बो फिल्म से अपना करियर शुरू करने वाले डेविड ने कई यादगार फिल्में दीं। लेकिन, उन्हें पहचान मिली 1941 में आई नया संसार से। डेविड ने करीब 110 फिल्मों में काम किया। फिल्म बूट पॉलिश में अपने किरदार जॉन चाचा से मशहूर हुए डेविड ने सर्वश्रेष्ठ

सहायक अभिनेता का फिल्मफेयर पुरस्कार भी जीता। डेविड पर फिल्माया गया गाना नन्हे मुन्ने बच्चे तेरी मुट्ठी में क्या है आज भी बाल दिवस पर सुनाई देता है। उनकी अन्य चर्चित फिल्मों में अनुपमा, उपकार, एक फूल दो माली, अभिमान, चुपके चुपके, बातों बातों में, शिवम सुंदरम, खट्टा मीठा और हमारे तुम्हारे को आज भी याद किया जाता है। वे अवार्ड नाइट्स व म्यूजिक नाइट्स होस्ट किया करते थे। उनका बोलने का अंदाज निराला था। उनकी ऊंचाई कम थी, पर अभिनय में उनका कद बहुत ऊंचा था। और गोलमाल शामिल हैं। 1969 में उन्हें भारत सरकार की तरफ से पद्मश्री से भी सम्मानित किया गया।

सुलोचना को हिंदी फिल्मों की पहली महिला सुपरस्टार माना जाता है। इसमें रोज का नाम भी लिया जा सकता है। अभिनेत्री सुलोचना और प्रमिला फिल्म प्रोड्यूसर भी थीं। उनकी सिल्वर फिल्म्स प्रोडक्शन कंपनी थी। उस दौर में फिल्म उद्योग को आकार देने में इनकी भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। सुलोचना का वास्तविक नाम रूबी मायर्स था, वे सिनेमा के शुरुआती मूक फिल्मों की पहली महिला सुपरस्टार थीं। अपनी अदाकारी और खूबसूरती की बदौलत वे सिल्वर स्क्रीन पर छाई रही। उन्होंने कई कामयाब फिल्मों में अपनी अदाकारी दिखाई। उन्होंने सिनेमा गर्ल (1926), टाइपिस्ट गर्ल (1926), बलिदान (1927), वाइल्ड कैट आफ बाम्बे (1927), माधुरी (1928), अनारकली (1928), इंदिरा बीए (1929), हीर रांझा (1929), सुलोचना (1933), बाज (1953), नीलकमल (1968), आम्रपाली (1969), जूली (1975), खट्टा मीठा (1978) जैसी कई फिल्मों में काम किया। 1973 में सुलोचना को दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

अभिनेत्री रोज भी लंबे अरसे तक दर्शकों के दिल की धड़कन बनी रही। प्रमिला भी प्रोड्यूसर रही, जिनका वास्तविक नाम इश्तर विक्टोरिया अब्राहम था। उन्होंने अगस्त 2006 में पहली मिस इंडिया (1947) का ख़िताब जीता था। उनकी शादी मशहूर अभिनेता कुमार (असल नाम सैयद हसन अली जैदी) से हुई। 1963 में कुमार पाकिस्तान चले गए, लेकिन प्रमिला ने भारत में ही रहना उचित समझा। उनकी ही बेटी नकी जहां ने 1967 में मिस इंडिया का खिताब हासिल किया। यह अनोखा संयोग कि मां और बेटी दोनों ने मिस इंडिया का खिताब जीता। उन्होंने 30 से ज्यादा फिल्मों में हंटर वाली टाइप के किरदार निभाए। इनमें उल्टी गंगा, बिजली, बसंत व जंगल किंग काफी हिट रही। उन्होंने अपने बैनर सिल्वर प्रोडक्शन में 16 फिल्मों का निर्माण किया गया। वे काफी टैलेंटेड थीं और उन्होंने कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन किया था। एक और यहूदी अभिनेत्री ने भी आरती देवी के नाम से कुछ फिल्मों में काम किया। उनका असली नाम रासेल सोफायर था।

अभिनेता और अभिनेत्रियों के अलावा बाम्बे फिल्म लैब के संस्थापक डेविड जरसॉन उमरेडकर, म्यूजिक डायरेक्टर बिन्नी एन सातमकर, कैमरामैन पेनकर इसाक, टेक्नीशियन रुबेन मॉसेस व रेमंड मॉसेस काफी लोकप्रिय रहे! ऑस्ट्रेलिया के फिल्मकार डैनी बेन मोशे हिंदी फिल्मों में यहूदी कलाकारों के 11 साल के योगदान पर एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म बनाई हैं। शैलोम बॉलीवुड द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ इंडियन सिनेमा। यह डॉक्यूमेंट्री मूक फिल्मों के दौर से 20वीं सदी के अंत तक भारतीय सिनेमा में यहूदियों के योगदान की कहानियां कहती है। भारत में यहूदी हजारों सालों से भले न रह रहे हों, लेकिन, यहां यहूदी विरोध नहीं रहा। शायद किसी और देश में सुलोचना, नादिरा और डेविड जैसे यहूदी कलाकारों को स्वीकारा नहीं जाता। न कोई देश पहली ब्यूटी क्वीन के तौर पर ही किसी यहूदी को स्वीकारता, जो भारत ने किया।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

बढ़ने लगा है फिल्मों में गालियों का चलन

अशोक जोशी

इन दिनों फिल्मों में गाली का चलन बढ़ने लगा है। जब भी पर्दे पर नायक या नायिका प्रचलित गाली देता नजर आता है, तो सिनेमा हॉल दर्शकों की हंसी या तालियों गूंजने लगता है। लगता है यह भी फिल्मों

में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का मामला बनाता जा रहा है। क्योंकि, सेंसर बोर्ड भी इसे कानों में रुई ठूंसे सुनता रहता है। जब वर्जित दृश्यों से पेट नहीं भरा, तो अब परदे पर अश्लील संवादों की मिसाइलें दागी जाने लगी। इससे घर में परिवार के साथ बैठे दर्शक भौचक्के हैं कि पता नहीं कब कौन सा ऐसा संवाद उछल कर आ जाए कि परिवार के सदस्य एक दूसरे से मुंह छिपाने की कोशिशें करने लगे।

अक्षय कुमार की नई फिल्म केसरी-2 में इसी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता देखने वालों के कानों तक गूंजने लगी। फिल्म के ट्रेलर में अक्षय कुमार जनरल रेजिनाल्ड डायर को गाली देते नजर आए, जिसे देख सभी को हैरानी हुई। क्योंकि, गाली को सेंसर भी नहीं किया गया। अक्षय ने इस बारे में सफाई देते हुए इसे उचित भी बताया है। उन्होंने कहा हां, मैंने इस (एफ) शब्द का इस्तेमाल किया। कमाल की बात है कि ये चीज देखी, लेकिन 'आप अभी भी गुलाम हैं' डायलॉग पर आपका ध्यान नहीं गया? क्या यह आपके लिए बड़ी गाली नहीं थी? मुझे लगता है कि उससे बड़ी गाली आपके लिए और कुछ हो ही नहीं सकती। मुझे खुशी होती अगर आप मेरे फक्क यू के बारे में पूछने के बजाय यह कहते कि उन्होंने 'गुलाम' शब्द का इस्तेमाल किया। ऐसे टाइम पर, अगर उन्होंने गोली भी मार दी होती, तो भी छोटा रहता।

अक्षय कुमार की बात में कितना दम है यह फैसला तो दर्शक करेंगे। हो सकता है कुछ लोगों के गले में यह उतर भी जाए। कहने को तो सिनेमा को समाज का आईना कहा जाता है। लेकिन, अपने घरों में भी हम आईने को इस एंगल से रखते हैं कि वह सब न दिखा दे जो हम और हमारे परिवार के लोग देखना नहीं चाहते। बेडरूम में आईना न रखने की हिदायत का सरासर उल्लंघन कर अब फिल्मकारों ने वहां आईना ही नहीं रखा, बल्कि खिड़की के बाहर दूरबीन भी रख दी, ताकि सब कुछ साफ साफ दिखाई दे। जब वर्जित दृश्यों को दिखाने से भी पेट नहीं भरा तो अब परदे पर गंदी बातों यानी अश्लील संवादों की मिसाइलें दागी जा रही है। तथाकथित प्रयोगवादी फिल्मों के नाम पर यह प्रयोग कुछ ज्यादा ही हो रहे हैं। इससे घर में परिवार के साथ बैठे दर्शक भौचक्के हैं कि पता नहीं कब कौन सा ऐसा संवाद उछल कर आ जाए कि परिवार के सदस्य एक दूसरे से मुंह छिपाने की कोशिशों में जुटें।

कुछ दिन पहले मेड इन चाइना और बाला के

ट्रेलर की चर्चा हुई थी, जिसके संवाद सुनकर एक पल के लिए चेहरे पर हंसी तो आ जाती थी। लेकिन, दूसरे ही क्षण यह सोचकर वह हंसी गायब हो जाती है कि घर के दूसरे सदस्य पर इसकी क्या प्रतिक्रिया होगी। बाला का गंजा नायक जब मैथुन और हस्तमैथुन में अंतर बताता है या सिर पर गुप्तांगों के बालों के प्रत्यारोपण की बात करता है या नीम हकीम बैल के वीर्य को सिर में लगाने की बात करता है, तो लगता है कि हम सिनेमा हाल में नहीं बल्कि गालियों से भरे किसी दलदल में फंसे हुए हैं।

फिल्मों में वर्जित संवादों का यह सिलसिला बहुत ज्यादा पुराना नहीं है। पहले जब किसी को गाली देनी होती थी तो संबंधित पात्र केवल ओठ हिला देता था। दर्शक उसका अंदाजा लगाकर आनंदित हो लेता था। उसके बाद बीप का जमाना आया। जब कभी वर्जित संवाद आता था तो बीप बीप की आवाज सारी बात बयां कर देती थी। उसके बाद फिल्मों में गालियों की जगह सांकेतिक भाषा का इस्तेमाल आरंभ हुआ जैसे तेरी मां का साकी नाका, भूतनी के, बहन के टके आदी। लेकिन, आज का सिनेमा इससे भी आगे निकल गया। लोकभाषा के नाम पर दर्शकों को गालियां यह कहकर परोसी जा रही है कि क्या करें वहां की बोलचाल ही ऐसी है ! वासेपुर में मनोज बाजपेई जैसे बड़े स्टार कलाकार बेझिझक अपनी क्षेत्रिय भाषा बोलते हैं घर जाकर जब अपने पिता जी का ... खुजला रहे होंगे, तब उनसे पूछियेगा हम कौन हैं? तिग्मांशु धूलिया जैसे निर्देशक और एक्टर भी डायलॉग बोलने में जरा नहीं झिझके भो' ... के अब तो सच बोल दे इसके अलावा डेली बेली के डायलॉग और फिल्म पीपली लाइव का संवाद साले यहां गां' ... फटी पड़ी

है, तुझे अपनी पड़ी है!

मल्टीप्लैक्स संस्कृति के विकसित होने बाद टिकट की बढ़ी हुई दरों को देने के लिए दर्शक को खींचना बेहद मुश्किल काम हो गया। इसलिए अब फिल्मकारों ने अश्लीलता के माध्यम से दर्शकों को लुभाने के का रास्ता अपनाया। इसका एक कारण यह भी है कि दर्शकों के सामूहिक अचेतन में अश्लीलता का तंदूर हमेशा सुलगता रहा है और प्रच्छन्न सेक्स की धारा समाज की निचली सतह में सदैव ही प्रवाहित रही है। सिनेमा के पर्दे पर अब सुदूर के उन गांवों की कहानियां और उनके किरदारों की भाषा सुनाई दे रही है, जहां सौ साल से सिनेमा नहीं पहुंचा था। वासेपुर, पान सिंह तोमर, बैंडेट क्वीन, हासिल, डेली बैली, ओय लकी लकी ओय और सोनचिरैया जैसी कितनी ही फिल्में हैं. जो उनकी भाषा के लिए भी जानी जाती हैं। इन फिल्मों के संवाद उस बोलचाल में लिखे गए हैं, जिसे स्थानीय लोग आपस में बोलते हैं। इसलिए इन फिल्मों के संवाद लोगों की जबान पर आसानी चढ़ जाते हैं। इन सालों में कुछ ऐसी फिल्में आयी हैं, जिन्हें उनकी भाषा के लिए बहुत दिनों तक याद किया जाएगा।

पहले तो फिल्मों में नायक ही गाली या अश्लील शब्दों का प्रयोग करता था। ज्यादा से ज्यादा वैम्प या तवायफ का किरदार निभाने वाली नायिकाओं से ऐसी बातें सुनने में आती थी। लेकिन आज की प्रगतिशील महिलाओं का सच दिखाने के प्रयास में निर्माताओं ने करिश्मा, स्वरा भास्कर और राधिका आप्टे जैसी नायिकाओं से वर्जित संवाद बुलवाने में कोताही नहीं बरती। पर्दे के बाहर वाकयुद्ध के लिए मशहूर कंगना भी इस दौड़ में पीछे नहीं है। भूमि पेडणेकर की फिल्म सोन चिरैया ने एक बार फिर बैंडिट क्वीन के अश्लील संवादों की याद वैसे तो शुभ मंगल सावधान एक पवित्र सा नाम लगता है। लेकिन, उसके दृश्य और संवाद सारी पाकीज़गी को हवा में उडा देते हैं। फिल्म के एक दृश्य में शादी के ठीक पहले आयुष्मान खुराना और भूमि पेडनेकर एक कमरे में बंद हो जाते हैं. बाहर लड़का-लड़की पक्ष के सारे लोग कुछ होने-न होने पर शर्त लगाते हैं। थोड़ी देर बाद बाहर आने पर आयुष्मान कहता है, हो गया जबकि भूमि कहती है, नहीं हुआ। फिर आयुष्मान भूमि से कहता है कि हां हां हो गया. इस पर वह भी मुस्कराती है और सारे लोग झूम उठते हैं।

इसी तरह से लुका-छिपी फिल्म के एक दृश्य कार्तिक आर्यन और कृति सैनन लिव-इन रिलेशनशिप के लिए किराए के एक घर में ठहरते हैं तो रात में रश्मि के बेड पर आने से पहले तकिए के नीचे कई फ्लेवर्ड कंडोम देखकर खुशी से झूम उठता है। कुछ दर्शक मानते हैं दृश्यों में बात सेक्स की होने के बावजूद लेखक-निर्देशक ने इसे इतने गुदगुदाने वाले अंदाज में रचा है कि सिनेमा हाल में दर्शक असहज महसूस करने की बजाए हंसते हैं। सिनेमा हॉल में तो पास बैठे दर्शक का चेहरा साफ दिखाई नहीं देता, लेकिन क्या यही बात उस सूरत में भी कही जा सकती है जब पूरा घर ड्राइंग रूम में बैठकर ये फिल्में देख रहा हो। सच बात तो यह है कि फिल्मकार अपनी जवाबदारी से मुंह नहीं फेर सकते और उन्हें ऐसा करना भी नहीं चाहिए वरना रील लाइफ और रियल लाइफ में फर्क की क्या रह जाएगा।

'थोड़ी-थोड़ी पिया करो'... फिलहाल!

प्रकाश पुरोहित

ज्यादातर पियक्कड़ इन दिनों गुजरात जा रहे हैं या गुजरात से सम्पर्क बनाए हैं, क्योंकि बिहार दूर है! मेरे शहर में शराबबंदी है तो मदद लेने और कहां जाएंगे! इतने बरसों से शराबबंदी के बावजूद यदि गुजरात में शराब की कोई कमी नहीं है तो यह उज्जैन के लिए तो कोचिंग क्लास की तरह काम आ रही है। जिनके रिश्तेदार हैं, फोन लगा कर पूछ रहे हैं कि सूखे शहर में गला तर कैसे किया जा सकता है!

'हम जब पिछली बार आए थे अहमदाबाद तो आप शराब कहां से और कैसे लाए थे?' फूफा से पूछा।

'अभी नए हो तो कुछ दिन दिक्कत आएगी, फिर तो घर बैठे मिलने लगेगी, तब तक तो भांग से भी काम चला सकते हो, महाकाल की नगरी में इस पर तो रोक नहीं है।' फूफा ने बता दिया। वह निराश हो गया!

'वैसे अभी कैसे काम चला रहे हो?' फूफा ने पूछा।

'आते-जाते से एक-दो बोतल मंगवा लेता हूं, ज्यादा तो ला नहीं सकते। आप तो जानते हो, अपनी तो रोज शाम की बैठक है।' बताया गया।

'तुम जल्दी घबरा जाते हो, हमारा अनुभव है कि जितनी तलब पीने वाले को होती है, उससे ज्यादा पिलाने वाले को रहती है, क्योंकि उसने तो पूंजी-निवेश की है! तुम तो शांति पकड़ कर बैठो, देखना शराब खुद चल कर तुम्हारे घर आएगी। शराबबंदी का यही फायदा है कि खरीदने कहीं नहीं जाना पड़ता, घर बैठे आ जाती है।'

'वो कैसे, क्या पुलिस नहीं पकड़ती?' उत्साह से पूछा।

'हमारे यहां तो पुलिस खुद ही 'घर पहुंच सेवा' में लगी रहती है, अब तुम्हारे यहां का सिस्टम हमें पता नहीं।'

'फूफाजी, शराब और पुलिस हर जगह की एक जैसी ही होती है। ठीक है, अभी धंधे को समझ रही है, जल्द ही रस्ते लग जाएगी, लेकिन अभी तो मुश्किल है ना! बुरी बात यह है कि जब घर में स्टाक पूरा होता है ना तो कम पीने में भी नशा हो जाता है, लेकिन जब यह पता हो कि यही आखिरी बोतल है तो नशा पूरी बोतल के बाद भी नहीं चढ़ता है।' दर्द बताया!

'शराबबंदी दरअसल हाथी के दांत हैं या यूं भी कह सकते हो कि उलटी तरफ से जैसे कान पकड़ते हैं ना, ठीक वैसा ही। इसमें भी होता तो पहले जैसा ही है, बस तरीका बदल जाता है। सच कहूं तो हमारे यहां शायद ही किसी को याद हो कि शराब पर रोक है। यह रिश्वत की तरह है, लेने वाले भले ही इनकार कर दें, देने वाले कभी पीछे नहीं हटते कि उन्हें गलत काम निकलवाने का यही सही रास्ता मालूम है!

इस तरह के संवाद उन लोगों के बीच भी हो रहे हैं, जो कई बरसों से संपर्क में नहीं हैं या जिनके बीच किसी पारिवारिक मसले को लेकर अबोला चल रहा है। शराबबंदी ने रिश्तों के नए दरवाजे खोल दिए हैं। शराब ने बरफ पिघला दी है! वैसे कोई पांच पैसे का एहसान नहीं ले, लेकिन शराब के मामले में कोई ठसक या अकड़ काम नहीं आती है। ठीक ही कहा है अमिताभ के पिताजी ने 'मंदिर- मस्जिद बैर कराते, मेल कराती मधुशाला।' यहां मधुशाला का आशय गन्ने के रस से नहीं है।

ऐसी विपदा आन पड़ेगी, ऐसा तो इसलिए भी नहीं सोचा था कि प्रदेश के मुखिया के भाई के पास ही सारे ठेके थे। मदहोश तो नहीं, लेकिन होश वाले सोच रहे हैं कि इसके पीछे क्या गणित रहा होगा। भाई का धंधा कोई ऐसे ही तो बंद नहीं कर देगा, जब तक कि किसी बड़े फायदे के आसार नहीं हों!

याद कर रहे हैं उन नशीले दिनों को, जब एक बार में ही पूरे बार के लिए, महीने भर का कोटा यूं ले आते थे, जैसे घर में ग्रासरी आती है। कवि भूषण की लाइन याद आ रही हैं 'तीन बेर खाती थीं, तीन बेर खाती हैं।' कहां तो बारह मास वसंत था और अब ये हालत है, जैसे रेगिस्तान की गरम रेत में नंगे पैर चल रहे हो। सुबह इसी चिंता से शुरू होती है और शाम बची हुई से फिक्र, गलत की जाती है।

शराबबंदी से वो महिलाएं ज्यादा खुश हैं, जो खुद मयनोशी करती हैं। पहले तो क्या था कि पति हर शाम या तो किसी दोस्त के घर पार्टी करते थे या फिर दोस्तों को अपने घर बुला लेते थे। दोस्त बुलाते तो कभी- कभार ही थे, घर आते ज्यादा थे और बोतल जब तक उलटी ना कर दें, सीधे नहीं होते थे, यानी अपने घर नहीं जाते थे। अब ऐसा नहीं हो रहा है। पंकज उधास का सबक काम कर रहा है 'थोड़ी-थोड़ी पीया करो।'

'पहले दिल खोल कर पीते थे, अब तला देख कर पैग बनाते हैं। पतिदेव अब हर शाम घर पर ही बैठक जमाते हैं और साथ के लिए पत्नी को भी बैठा लेते हैं, वरना अब तक तो किचन में सहेलियों के साथ ही वोदका या वाइन चखती रही हैं, क्योंकि खाना भी तो पकाना होता था। महिलाएं नहीं जानतीं कि शराबबंदी के ये भी अपने फायदे हैं।

नशे के इस नए निजाम ने सब उलट-पुलट दिया है कि कल तक जो अपने बार को संग्रहालय की तरह दिखाया करते थे, अब आधी बोतल लिए कहते हैं, बस इतनी ही बची है। पूरा शहर भांग खा कर खोज में लगा है कि कैसे पहले जैसा हरा-भरा 'बार' नजर आने लगे। 'हाऽऽ! बार की यह दुर्दशा देखी ना जाई।'

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

हादसों को अवसर मान जीना सीखें ...

चलते चलते गिरना ज़रूरी है
इक बार जीने के लिये
गिर कर फिर उठना ज़रूरी है
हौसला बुलंद करने के लिये!

कितना कुछ सीखा जा सकता है हादसों से मेरा ये मतलब बिल्कुल नहीं कि हादसों से ही सीखें। अगर आप किसी हादसे का शिकार हो गये हों तो सीखें। उसमें से उबरने का सबक

ज़िंदगी को सुकून चाहिए
ज़िंदगी सुकून चाहती थी
मैं उसका कहना नहीं मानती थी
सो घूमते घूमते, हरी घास का निमंत्रण आया
सूरज की रौशनी भी शरारत पे उतर आई
सूरज ने आंखों पे फ्लैश चमकाया
अदृश्य पवन ने धक्का दिया
पैर लड़खड़ाया
यूँ सारों की साज़िश से
पैर पे प्लास्टर चढ़ गया
ज़िंदगी को सुकूनों आराम मिल गया
मुझे किताबें पढ़ने का मौका हाथ आया
मैंने कहा
अरे ज़िंदगी, यूँ हीछुट्टी मार लेती
धक्का देने की ज़रूरत क्या थी
ज़िंदगी हंस के बोली
तुम इसाँ, जीते जी, चैन से जीते नहीं
मरने का वक्त तुम्हारा आया नहीं
सो फेक्कर से काम चला लिया
इसी बहाने
चलो तुमने भी थोड़ा सुस्ता लिया
और पूछ लिया
और क्या कह रही है ज़िंदगी

इसी बीच मैं इस हादसे से गुज़री कि प्लास्टर के बाद, सर्जरी हुई, फिर प्लास्टर लगा। उम्र को देखते हुये घायल पैर की हीलिंग में थोड़ा वक्त लगेगा।

ज़िंदगी लंगड़ी लंगड़ी खेल रही है
लाठी के सहारे आगे पीछे हो रही है
बता रही है
अब संभल के चलो
मुझे भी ज़रूरत है आराम की

चीख-चीख के मुझसे कह रही है।

कितने शब्द जो सकारात्मक थे बिस्तर पर लेटे-लेटे सीखे ताकि पड़े पड़े अवसाद में ना चलीजाऊँ। शुरूआती दौर में खूब टी.वी., मोबाइल से जी बहलाया पर मेरी उम्र और स्वास्थ्य के लिये दोनों हानिकारक थे बस उन

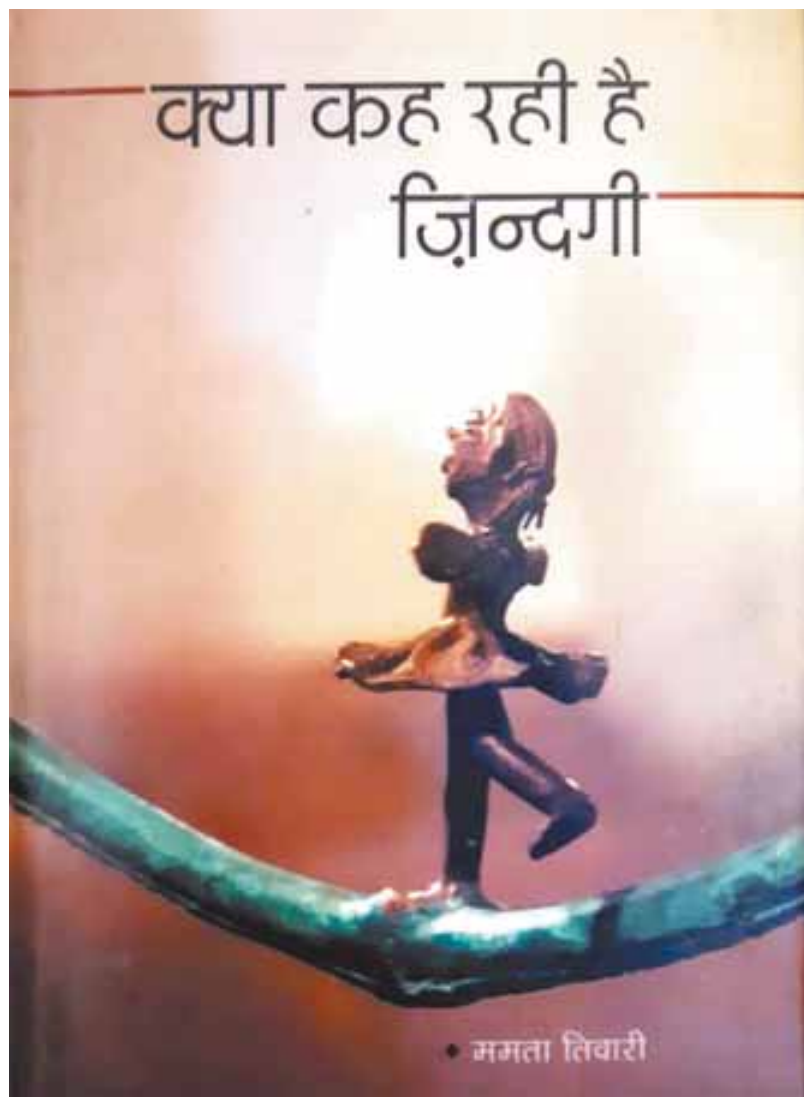

दोस्तों से भी बात हुई जो बहुत दिनों से संपर्क में नहीं थे, करीब आये। खूब पढ़ना शुरू किया

ज़ाहिर सी बात है पढ़ना शुरू किया तो लिखने का मन बढ़ता गया। अपने शरीर पर गौर किया।

कितनी बार हुये मानसिक
हादसों के शिकार
शारीरिक चोट से
खुद को संभालना सीखा

कौन इसां सही है या गलत मेरे लिये
जानना सीखा
क्या खाना होगा
कैसे रहना होगा
कौन दौड़ा चला आया
कौन भूल गया
कौन आया, कौन नहीं
शुभचिंतकों को पहचानना सीखा
ये हादसा था, या नियामत मेरे लिये
दर्द सहने, खुद के साथ रहने का
सलीका सीखा
एक नये सिरे से ज़िंदगी जीना सीखा।

लेटे-लेटे, थोड़ा उठ के शरीर की देखभाल करने लगी, बाल त्वचा पर फोकस किया सालोंबाद खुद के बारे में चिंतित हुई क्योंकि एक ही स्थान पे लेटना उठना था सो- डायटीशियन से खाने का चार्ट बनवाया। मानसिक रूप से खुद को मजबूत करने के लिये खुद से, शरीर से, प्यार करने लगी। दूसरों की मदद स्वीकार की, माना कि शरीर उम्रदराज़ हो रहा है पर खुद को अकेले भी संभालना, रहना सीखना होगा। कोई लंबे समय तक एक मरीज़ के साथ नहीं बैठ सकता चाहे वो घर के सदस्य क्यों ना हो। स्टॉफ के सभी सदस्यों की आभारी हुई वो कितना बड़ा सपोर्ट सिस्टम है ये माना। प्रार्थना, ध्यान, प्राणायाम पर मन केंद्रित किया मेनिफेस्टेशन लिख ही रही थी। अफरमेशन, अबंडेंस पे ध्यान दिया। नया शब्द प्लीसीबो इफेक्ट को सीखा। आइये, जिन्होंने पहली बार सुना उन्हें बता दूँ। ये एक ऐसी प्रक्रिया है जो किसी दवाई से नहीं जुड़ी। ये एक मनौवैज्ञानिक प्रभाव की बात है जिसे हमें अपने आप को सिखाना होगा। इसमें ध्यान केंद्रित कर खुद से कहना और खुद को महसूस करना, लिखना और खुद में सकारात्मक परिवर्तन होते देखना जैसी बातें है। अकेले बैठे-बैठे या लेटे-लेटे खुद के अंगों को अपने आप को ठीक होते देखें और खुद से कहे कि मैं स्वस्थ हूँ। कुल मिलाकर नकारात्मक परिस्थितियों में भी सकारात्मक माहौल, सोच रखना होगी वक्त लग रहा है, अवसाद से निकल रही हूँ खुद से सुबह-सुबह उठ के (एक आईना पास रख लिया है जिसमें सुबह सुबह खुद को मुस्कुराते हुये) पूछ रही हूँ और क्या कह रही है जिंदगी?

ठंडा अहसास

फोटो - बंसीलाल परमार

नाखून कटवाने से 'शहीद' नहीं होते!

❐ यूके से
प्रज्ञा मिश्रा

अमेरिका से कभी-कभी ऐसी खबर आती है कि अगर यह किताब होती तो हम सोचते कि लिखने वाला या तो मोटी बुद्धि का है या बातों को बढ़ा-चढ़ा कर पेश कर रहा है। ऐसी ही खबर है अमेजन के मालिक जेफ बेजोस की कंपनी की ब्लू ओरिजिन रॉकेट लांच की।

यह रॉकेट अंतरिक्ष की सीमा तक छह महिलाओं को ले गया और दस मिनट में लौट भी आया। इस सफर को कंपनी ने इस तरह बताया, जैसे दुनिया में इससे पहले महिलाओं को आगे बढ़ने का मौका ही नहीं मिला था। छह महिलाओं में जेफ बेजोस की मंगेतर लॉरेन सांचेज, गायक केटी पैरी और सीबीएस की प्रेज़ेंटर गेल के साथ दो साइंटिस्ट और फिल्म प्रोड्यूसर भी थे।

अंतरिक्ष, ग्रह और विज्ञान को समझने की काबिलियत कम ही लोगों में है और यह कहना गलत नहीं होगा कि ऐसी जगह उनको ही जाना चाहिए, जिन्हें उसकी कद्र-ज्ञान हो। ब्लू ओरिजिन कंपनी के हिसाब से यह दस मिनट की फ्लाइट सिर्फ अंतरिक्ष सफर के अनुभव के लिए थी, न कि किसी वैज्ञानिक काम के लिए। ऐसी फ्लाइट्स का खर्चा सिर्फ वे ही उठा सकते हैं, जिनके पास अथाह पैसा हो, जैसे जेफ बेजोस और उनकी मंगेतर। कहा जा रहा है कि यह फ्लाइट महिलाओं को मजबूत करेगी, लेकिन सब उलटा-पुलटा है। अमीरों के पैसे से अमीर ही अंतरिक्ष यात्रा करेंगे तो आम महिला की जिंदगी में सुधार होगा।

ऐसे सफर में कितना जहर बढ़ता है, इससे इन पैसे वालों को कोई फर्क नहीं पड़ता। अभी तो एलन मस्क की कंपनी भी स्पेस टूरिज्म कंपनी लाने वाली है। हमारे परम मित्र डोनाल्ड ट्रम्प उनकी बातों को टाल ही नहीं सकते। यात्रियों को अब एस्ट्रोनॉट बुलाया जा रहा है। अमेरिका की सैली राइड पहली महिला थीं, जो (1983 में) अंतरिक्ष गईं और उनके बाद यह सिलसिला जारी है। अंतरिक्ष से हाल ही में लौटी सुनीता विलियम्स को भी एस्ट्रोनॉट कहा जाए और दस मिनट के सफर को पैसों के दम पर पूरा करने वाले को भी तो बात गले नहीं उतरती।

सही मायनों में जेफ बेजोस और उनकी कंपनी वालों को भी पता है कि महिलाओं का नहीं, सिर्फ उनका ही भला होना है, क्योंकि पैसे कमाने का जरिया मिल गया है। जेफ 'वाशिंगटन पोस्ट' के मालिक भी हैं। उन्होंने 2024 के चुनाव में न सिर्फ ट्रंप को पैसे से मदद पहुंचाई थी बल्कि ट्रंप के खिलाफ और कमला हैरिस की खबर को न छापने की हिदायत दी थी। उसी दोस्ती का नतीजा है कि अंतरिक्ष घुमाने में बेजोस आगे निकल गए हैं।

फिल्म 'स्टार ट्रेक' (2021) के एक्टर विलियम शेटनर भी ऐसी ही फ्लाइट में स्पेस ट्रेवल कर लौटे। उनका कहना था कि पहले बहुत खुश था, लेकिन वहां से लौट कर लगा जैसे अंतिम संस्कार से लौटा हूं। सही मायनों में छह महिलाओं का सफर इनके लिए ही खास होगा, क्योंकि आम इंसान के लिए इसका कोई मतलब नहीं है।